www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धनवान बनने के गुप्त रहस्य

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धनवान बनने के गुप्त रहस्य

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०– २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१३ मूल्य : ९.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

लेखक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मूल्य : ९.०० रुपये

मुद्रक :

युग निर्माण योजना प्रेस,

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

आज सर्वत्र धन का अभाव और दरिद्रता का साम्राज्य दिखाई दे रहा है। जहाँ देखिए वहाँ गरीबी और बेकारी दिखाई पड़ती है। पैसे की हर जगह चाह है, परंतु उसकी प्राप्ति नहीं होती। बिना धन के मनुष्य का विकास रुक जाता है; उसकी उमंगें कुचल जाती हैं और नाना प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है। पैसे की समस्या आज प्रधान रूप से समाज के सामने उपस्थित है।

समय की अस्थिरता और राजनीतिक दाँव-पेंच तो इसका कारण हैं ही, पर सबसे बड़ा कारण लोगों की व्यक्तिगत अयोग्यता है। बुद्धिमान मनुष्य बुरे समय में भी सुख से रहते हैं और समृद्धि इकट्ठी कर लेते हैं। लक्ष्मी उद्योगी पुरुष की दासी है, वह अपने रहने योग्य स्थान जहाँ देखती है, वहाँ अपने आप चली जाती है।

इस पुस्तक में किसी व्यापार विशेष की गुप्त विधियाँ नहीं बताई गई हैं, वरन् उनके गुणों पर प्रकाश डाला है, जिनके होने से बेकार आदमी काम पर लग सकते हैं; काम पर लगे हुए उन्नति कर सकते हैं। जो लोग किसी मंत्र से विपुल संपत्ति प्राप्त करने का विधान इस पुस्तक में ढूढ़ेंगे, उन्हें निराशा ही मिलेगी। हाँ उन लोगों के लिए इसमें पर्याप्त मसाला है, जो यह जानना चाहते हैं कि पिछले उन्नतिशील पुरुष किस मार्ग का अवलंबन करके उन्नति के शिखर तक पहुँचे हैं ! हमारा विश्वास है कि कर्तव्यशील नवयुवकों को इससे अपना पथ निर्माण करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी।

—श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धनवान बनने के गुप्त रहस्य

दरिद्रता से छुटकारा

"निर्धनता से मनुष्य को लज्जा आती है, लज्जा से पराक्रम नष्ट हो जाता है, पराक्रम नष्ट हो जाने पर अपमान होता है, अपमान से दु:ख होता है, दु:ख से शोक होता है, शोक से बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि के न रहने से मनुष्य का नाश हो जाता है। सच है कि निर्धनता सब विपत्तियों की जड़ है।"

—एक महापुरुष

क्या आप दरिद्रता की जंजीरों में जकड़े हुए हैं ? और अपने को उससे मुक्त होने में असहाय समझते हैं ? कदाचित आप अपने दुर्भाग्य पर रोते होंगे और इन दु:खद परिस्थितियों के लिए भाग्य को, ईश्वर को या अन्य मनुष्यों को दोषी ठहराते होंगे। आप सोचते होंगे कि ईश्वर और उसका संसार कितना अन्यायी है, जो किसी को विपुल संपदा देता है और किसी को दरिद्रता में आँसू बहाने के लिए छोड़ देता है।

यदि आप ऐसी बातें सोचते हैं, तो निस्संदेह एक बड़ी भूल करते हैं। आपकी दरिद्रता या विपत्ति का कारण उनमें से एक भी नहीं है, जिन्हें कि आप दोष दे रहे हैं। रोना-कोसना छोड़िए, विचारपूर्वक देखिए, इन अप्रिय परिस्थितियों के बीज आपके अंदर छिपे हुए हैं। दूसरों को दोष देना और कायरों की तरह रोना-घबराना—ये बातें प्रमाणित करती हैं कि आपको दरिद्रता में ही पड़ा रहना चाहिए और उससे भी अधिक दु:ख भोगना चाहिए, जितना कि इस समय भोग रहे हैं। आत्मविश्वास करना, अपने ऊपर भरोसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रखना, बढ़ने के लिए प्रयत्न करना—वे गुण हैं जो हर उन्नतिशील मनुष्य में होते हैं। चिंता करना, दुखी रहना, दूसरों को दोष देना, यह एक प्रकार के आत्मसंहार है; क्या कोई भी आत्महत्यारा दु:ख के अंधकार को हटाकर सुख का प्रकाश प्राप्त करने में अब तक समर्थ हुआ है ?

उठो, दरिद्रता के विचारों को हटाकर एक तरफ फेंक दो। मत सोचो कि हम गरीब रहने के लिए पैदा हुए हैं। अपने दिल को अमीर बनाओ, फिर बाहर की परिस्थितियाँ बदलने में भी देर न लगेगी। विश्वास करो कि हमारे पास जितनी कुछ योग्यता है, उसी का अच्छे-से-अच्छा उपयोग कर सकते हैं। छोटे कामों की उपेक्षा करके बड़े काम प्राप्त नहीं किए जा सकते हैं, इसलिए यदि उत्तम स्थिति चाहते हो तो वर्तमान स्थिति का सबसे अच्छा उपयोग करके यह साबित कर दो कि हम बड़ी संपदा के अधिकारी हैं। पहली कक्षा की पढ़ाई की उपेक्षा करके जो दसवीं कक्षा का पाठ याद करना चाहता है, वह एक गलत बात सोचता है। यदि वह ऐसा प्रयत्न करेगा, तो असफलता ही प्राप्त करेगा। कदाचित किसी प्रकार ऊँची कक्षा की पुस्तकें प्राप्त कर भी लें, तो उससे वह छीन ली जाएँगी। प्रकृति का यह अखंड नियम है, कि जो अपनी प्राप्त वस्तु का सदुपयोग करता है, उसे वह अधिकाधिक दे दी जाती है और जो दुरुपयोग एवं उपेक्षा से काम लेता है, उससे वह वस्तु छीन ली जाती है। दु:खद परिस्थितियों में पड़कर जब आप रोते हैं और कर्तव्यहीन होकर बैठ जाते हैं, तो बिल्कुल यह साबित करते हैं कि हम ठीक इसी स्थिति के अधिकारी हैं, जो आज प्राप्त हो रही है।

आप एक छोटी झोंपड़ी में रहते हैं और चाहते हैं कि कोई बढ़िया वाला मकान प्राप्त हो। आपकी इच्छा को ईश्वर अवश्य पूर्ण करेंगे, बशर्ते यह साबित कर दिया जाए कि हम वैसा मकान प्राप्त करने के अधिकारी हैं। अपनी आज की छोटी झोंपड़ी को इतनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साफ-सुथरी, सुंदर चित्ताकर्षक बनाओ जितना कि बना सकते हो। परवाह नहीं कि सजावट की बढ़िया चीजें खरीदने के लिए पैसा नहीं है। संसार में सजावट का इतना अधिक और वेशकीमती सामान भरा पड़ा है, जिसकी कोई सीमा नहीं और जो हर गरीब-अमीर को मुफ्त मिलता है। सुंदरता की तलाश करो, अपने दृष्टिकोण को सौंदर्यमय बनाओ, असंख्य साधन अपने आप सामने आकर खड़े हो जाएँगे, जो उस झोंपड़ी को बढ़िया महल-सा सुंदर बना सकते हैं। पहले अपनी मनोवृत्ति को बढ़िया बनाओ, तो मकान भी तुम्हें बढ़िया मिल जाएगा। यदि आज अपनी झोंपड़ी को सड़ी-गली, मैली-कुचैली, गंदी और अव्यवस्थित बनाए हुए हो, तो किस मुँह से कहते हो कि हमें रहने के लिए बढ़िया मकान चाहिए ? क्या परमात्मा ऐसे आलसियों पर अपनी विभूतियों को सुशिक्षित रखने की जिम्मेदारी डालेंगे ? एक धर्मशाला में बहुत-से लोग ठहरे थे, उनमें से कुछ तो बड़े सुशिक्षित थे और कुछ निरे फूहड़। शिक्षितों ने अपने कमरों को साफ-सुथरा रखा और फूहड़ों ने गंदगी फैला दी। धर्मशाला का मालिक जब निरीक्षण करने आया, तो उसने प्रसन्नतापूर्वक सुशिक्षितों को और भी बढ़िया स्थान रहने के लिए दे दिया, किंतु फूहड़ों पर बहुत नाराज हुआ। दयालु स्वभाव होने के कारण उसने उन्हें बिल्कुल निकाला तो नहीं, पर उन्हें छोटे-गंदे और टूटे-फूटे कमरों में रहने के लिए भेज दिया; जिनमें कि ऐसे ही लोगों को अक्सर ठहराया जाता था। दरिद्रता एक दंड है जो प्रकट करती है कि यह मनुष्य अपने कर्तव्य की उपेक्षा करने एवं फूहड़पन की आदतों से घिरा हुआ है। आत्मविश्वास द्वारा समृद्धि प्राप्त करने के स्थान पर जो हीन मनोवृत्ति स्वीकार करके दीनता लेना पसंद करता है, ईश्वर उसे वही वस्तु दे देते हैं। मधुमक्खी के लिए फल की और गुबरैले कीड़े के लिए गोबर की, उसकी दृष्टि में परिपूर्ण व्यवस्था है, अपनी इच्छानुसार जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिसे चाहता है, पसंद कर लेता है और वह वस्तु उसे स्वल्प प्रयास से ही प्राप्त हो जाती है।

संभव है कि आपको अधिक परिश्रम करना पड़ता हो और फुरसत कम मिलती हो, पर बारीकी से ढूँढ़ने पर पता चलेगा कि नित्यकर्म एवं परिश्रम के बाद भी बहुत फालतू समय बचाया जा सकता है। यदि इस समय का अच्छा उपयोग करने की इच्छा नहीं है, तो ईश्वर अधिक अवकाश एवं सुविधा देगा भी नहीं, क्योंकि यदि वह अधिक समय दे और परिश्रम हलका कर दे, तो आपके आलसीपन, उदासीनता और अकर्मण्यता की ही वृद्धि होगी। इसीलिए ऐसा मत सोचो कि हमें अमुक सुविधा मिल जाए, तो बहुत सफलता प्राप्त कर लेंगे। जो संपन्न दिखाई देते हैं उन्होंने बड़े अध्यवसाय से काम लिया है और छोटे से बड़े बने हैं। सबसे अधिक मरुभूमि में ही सबसे सुंदर फूल खिलते हैं, उसी प्रकार कठिन परिस्थितियों में ही मनुष्य उन्नति करते हैं। कठिनाइयों से संघर्ष और विपत्ति की टक्करों से ही वह तेजी प्राप्त होती है, जिसके कारण उक्त अवस्था प्राप्त होती है। कोई मनुष्य तभी तक समृद्ध रह सकता है, जब तक कि उसके अंदर तेजी है। जहाँ कठोर कर्तव्य से बचने और मौज करने की मनोवृत्ति पैदा हुई, वहाँ कुबेर का खजाना भी स्थिर नहीं रह सकता। हम देखते हैं कि अमीरों के लड़के जिन्हें मौज करने की ही शिक्षा मिली होती है, स्वतंत्र होते ही फजूलखर्ची में बाप-दादों की सारी कमाई उड़ा देते हैं और अंत में अपना ठीक पद गरीबी प्राप्त कर लेते हैं।

निश्चय ही दरिद्रता एक अस्वाभाविक वस्तु है। आत्मा ऐश्वर्यशाली है, उसके साथ दीनता का भला क्या संबंध हो सकता है ? दयामय परमात्मा की कदापि ऐसी इच्छा नहीं हो सकती कि उसका पुत्र दीनता और दरिद्रता में जीवनयापन करे। मनुष्य को रोटी-कपड़े की चिंता में ही उलझे रहने के लिए नहीं, वरन् किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

महान उद्देश्य के लिए इस संसार में भेजा गया है। हम जब तक दरिद्रता में बँधे रहते हैं, तब तक न तो कोई महत्त्व का काम कर सकते हैं और न अपनी सद्वृत्तियों का ठीक प्रकार विकास कर सकते हैं। भूखा मनुष्य कैसे अपने शरीर और मस्तिष्क को सुव्यवस्थित रख सकता है ? आनंद और आशा का नाश करने वाली यह अस्वाभाविक परिस्थिति न केवल उन्नति का मार्ग अवरुद्ध करती है, वरन् अनेक बुराइयों को भी जन्म देती है एवं प्रेम के स्थान पर कलह और आनंद के स्थान पर दुःख उपजाती है। कई बार तो वह मनुष्य को नहीं रहने देती और अपमान, अभाव, लांछन, ग्लानि आदि के द्वारा आत्महत्या जैसी दुःखद घटनाएँ उपस्थित करती हैं। न जाने कितने असंख्य जीवन इसकी चक्की में पिसकर बरबाद हो चुके हैं। संसार में दरिद्रता से बढ़कर कष्टदायक और बचने योग्य वस्तु दूसरी नहीं है। यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि मनुष्य जीवन का ताना-बाना इस प्रकार बुना गया है कि सुखपूर्वक जन्म व्यतीत किया जा सके, प्रभु की इच्छा है कि हम आनंदमय परिस्थितियों का उपयोग करें। जब कभी इसके विपरीत अवस्था उत्पन्न हो और दरिद्रता आ घेरे, तो समझना चाहिए कि हमारे अंदर कुछ विकार पैदा हुआ है। हम रास्ता भूल रहे हैं और राजमार्ग को छोड़कर झाड़-झंखाड़ों में भटक गये हैं। यदि आप दरिद्र अवस्था में आ पहुँचे हैं तो ठहरिए और विचार कीजिए कि हमारे अंतःकरण ने किन दुष्वृत्तियों को अपना लिया है, जिनके कारण दरिद्र भोगना पड़ रहा है।

यदि कोई ऐसे दैवी कारण उपस्थित हो जाएँ, जिनके कारण दरिद्रता अनिवार्य हो, तो उसमें बेइज्जती की बात नहीं है। शारीरिक असमर्थता या किसी अपरिहार्य कारण से जो लोग गरीब हो जाते हैं; दुनिया उनसे घृणा नहीं करती, वरन् उन पर दया करके सहायता करती है। असल में बेइज्जती की बात तो यह है, कि हाथ-पाँव और बुद्धि होते हुए भी अभावों के कारण कष्ट भोगें। निस्संदेह दरिद्रता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का कारण दुर्बुद्धि है। (१) आलस में समय गँवाना, (२) निराशा में पड़े रहना, (३) अपना स्वभाव अप्रिय बना लेना, (४) काम से जी चुराना, (५) छोटा काम करने में बेइज्जती समझना, (६) स्थिति से अधिक खर्च करना, यही वे दुर्गुण हैं जो कुबेर को भी दरिद्र बना सकते हैं। यदि आप दरिद्र हैं तो यह सब या इनमें से थोड़े-बहुत दुर्गुण अवश्य घर किए हुए होंगे, चाहे भले ही अपनी आँख को टेंट दिखाई न पड़ता हो। आप समझते होंगे ये दोष छोटे हैं, इनके लिए दरिद्रता जैसा कठोर दंड न मिलना चाहिए। पर जब विचारपूर्वक देखा जाता है तो प्रतीत होता है कि ये आदतें तुच्छ नहीं बड़ी भयंकर हैं, और दारुण पापों को उत्पन्न करने वाली हैं। झूठ, छल, अनाचार, चोरी, हिंसा, हत्या जैसे दुष्ट कर्मों को स्वभावत: कोई मनुष्य नहीं करना चाहता, पर यही दुर्बुद्धियाँ हैं जो मनुष्य को दुष्ट कर्म करने के लिए मजबूर करती हैं। हमारा मत है कि चोरी और हत्या के समान ही आलस्य अकर्मण्यता, फजूलखर्ची आदि दोष हैं और इन पापों के परिणामस्वरूप जीते-जी नरक की आग में झुलसना पड़ता है। यह कहने में कुछ भी मिथ्या बात नहीं कि दरिद्री नरक भोग रहा है। यदि ऐसे नारकीय व्यक्ति को संसार दुतकारता है और घृणा की दृष्टि से देखता है, तो इसमें कुछ भी अनुचित बात नहीं है।

एक भले आदमी को शर्म करनी चाहिए कि वह गरीबी में जकड़ा हुआ है, जबकि दरिद्रता को हटाना हमारे अपने हाथ में है, तो क्यों नहीं उसे दूर कर देना चाहिए ? कहते हैं कि दरिद्रों की कोई मदद नहीं करता, सचमुच वे इसी के पात्र हैं कि उनकी कोई मदद न करे। हम जब अपने चारों ओर दृष्टि पसारकर देखते हैं, तो दरिद्रता के भीषण दृश्य दिखाई देते हैं। पीले और पिचके हुए मुँह वाले नवयुवक जिनका शारीरिक स्वास्थ्य नष्ट हो चुका है, बेढंगे जीवन के भार से कराहते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। बेशक, इसमें शासन-व्यवस्था की बड़ी भारी जिम्मेदारी है, फिर भी स्वयं वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नवयुवक भी निर्दोष नहीं हैं। इसमें से अधिकांश के मनों के भीतरी परदे पर यह विश्वास भली भाँति जड़ जमाकर बैठ गया है कि गरीबी से हमारा पीछा नहीं छूट सकता। वे सोचते हैं कि जो भाग्य में लिखा होगा सो होगा। यदि हमारे भाग्य में धनी होना बदा होता, तो किसी अमीर के घर जन्म लेते। जब वे व्यापार की ओर दृष्टि दौड़ाते हैं, तो उन्हें सबसे पहले यह सिद्धांत याद आता है कि "पैसे को पैसा कमाता है।" जब हमारे पास पैसा नहीं है, तो धनवान कैसे बन सकते हैं ? वे अपनी योग्यता पर से विश्वास गँवा देते हैं और देखते हैं कि हमारे लिए कोई काम नहीं है; हमें तो इसी कष्ट में पड़ा रहना पड़ेगा। अपने ऊपर से विश्वास उठा लेना, निराश हो बैठना, उद्योग को तिलांजलि दे देना ऐसे कारण हैं, जिनके साथ दरिद्रता दृढ़तापूर्वक बंधी हुई है।

दारिद्र स्वयं उतना विघातक नहीं है, जितने उसके विचार। हम तुच्छ है, हमें तो गरीब रहना है, हम क्या कर सकते हैं? इस प्रकार के विचार मानो अपने आपको दरिद्रता के बंधन में आबद्ध करना है। जो अपने को दीन-हीन और भिखारी समझता है, वह अपने विश्वासों के आधार पर जीवन भर वैसा ही बना रहेगा। उनके लिए शुभ दिन कभी न आवेगा। यदि आप सोचते रहें कि समय बड़ा खराब है, हमारी दशा बिगड़ती ही जाएगी, तो विश्वास रखिए कि समय खराब हो या न हो, आपके लिए अवश्य खराब होगा और आपकी दशा बिगड़ जाएगी। विचारों में एक बड़ी भारी चुंबक शक्ति भरी हुई है, मन में रहने वाली बात अपने आकर्षण द्वारा अनंत आकाश में से ऐसे तत्त्वों को अपनी ओर आकर्षित करती है, जो उसको बल देते हैं। देखा गया है कि भय की कल्पना करने वालों के समक्ष वह भय साक्षात् आकर खड़ा हो जाता है। प्रकृति का भंडार हमारे लिए खुला हुआ है, जो जिस वस्तु को चाहता है, अपनी इच्छानुसार चाहे जितनी ले सकता है। यदि आप दीनता के विचार निरंतर करते रहते हैं, तो वह आपका इष्टदेव बन जाएगी और प्रसन्न होकर आपके चारों ओर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

घेरा डालकर बैठ जाएगी। जो पश्चिम की ओर मुँह करके चल रहा है, उसको यह आशा न करनी चाहिए कि वह पूर्व में जा पहुँचेगा। दरिद्र मनोवृत्ति के व्यक्ति समृद्धि को प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

एक व्यक्ति का हीरे का कंठा खो गया, उसने समझा किसी ने चुरा लिया है। उसकी शेष संपत्ति भी थोड़े दिनों में समाप्त हो गई और वह दो-चार आने रोज की मजदूरी करने लगा। इस समय दरिद्रता से उसे बड़ा कष्ट हो रहा था। एक बार फटे हुए कुर्ते पर हाथ गया, तो उसे मालूम हुआ कि कंठा तो गले में पड़ा हुआ है। सारे दरिद्रता के समय में वह लाखों रुपये का कंठा साथ रहा, परंतु वह व्यक्ति उसे भूल गया था और कष्ट भोगता रहा था। दक्षिण में गोलकुंडा नामक स्थान पर हीरों की प्रसिद्ध खान है। यह स्थान पहले अली हाफिज नामक पारसी के पास था। उसे एक हीरे की जरूरत थी, इसके लिए उसने उस भूमि को बेच दिया और बाजार से एक हीरा लाया। उसे क्या पता था कि जिस भूमि को मैं बेच रहा हूँ, उसमें बहुमूल्य हीरों का खजाना भरा पड़ा है। नेवड़ा की सबसे मूल्यवान सोने की खान को उसके मालिक ने एक व्यक्ति के हाथों पाँच सौ रुपये मे बेचा था। यदि वह जानता तो ऐसा न करता। मनुष्य में उपार्जन और संचय करने की बड़ी भारी शक्ति छिपी हुई पड़ी है, पर उसे जान नहीं पाता और उपरोक्त उदाहरणों का अनुकरण करता है। आकाश मंडल में विद्युत शक्ति का भंडार पृथ्वी के आदि से ही छिपा पड़ा था, पर वह मिला तब जब मनुष्य उसे ढूँढ निकालने को तत्पर हो गया। आपके अंदर ऐसी-ऐसी योग्यताएँ भरी हुई हैं, जो बहुत थोड़े समय में मनोकामनाएँ पूर्ण कर सकती हैं। वे प्रतीक्षा कर रही हैं कि अहिल्या की जड़ शिला की तरह हमें कोई राम मृतक से जीवित कर दे। क्या आप उन्हें जीवित नहीं करेंगे ? मत सोचिए कि हम गरीब हैं, इसलिए क्या कर सकते हैं, मत कहिए कि हमारी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

योग्यता तुच्छ है, इसलिए कुछ कर न सकेंगे। संसार में अद्भुत और आश्चर्यजनक आविष्कार करने वाले मनुष्य गरीब ही थे।

धनवान कैसे बनें ?

हमने ऐसी अगणित पुस्तकें पढ़ी हैं, जिनमें धनवान बनने की विविध विधियाँ बताई गई हैं। हमने अनेक धनी व्यक्तियों के पास जाकर उनसे धन उपार्जन के उपाय पूछे हैं, परंतु कहीं भी कोई ऐसा उपाय न मिला जिसके द्वारा बात-की-बात में धन कमाया जा सके। विशेष व्यवसायों में सफलता प्राप्त करने के विशेष नियम हो सकते हैं, पर "धनवान बनने का मूल तत्त्व यही है कि अपनी योग्यता बढ़ाइए, परिश्रम कीजिए, मितव्ययी बनिए और ईमानदारी को दृढ़ता के साथ पकड़े रहिए।" इन थोड़े-से शब्दों को तुच्छ मत समझिए, इसमें लाखों विद्वानों का तत्त्वज्ञान और करोड़ों श्रीमानों का अनुभव कूट-कूटकर भरा हुआ है। यह धनी लोग जो तुम्हें बहुत पैसे वाले दिखाई पड़ते हैं, एक दिन गरीब ही थे। जब उन्होंने थोड़ी आमदनी को सुव्यवस्था से खर्च करना सीखा तो उनके पास कुछ बचा और बचत चक्रवृद्धि ब्याज के सिद्धांत से बढ़ते-बढ़ते इतनी हो गई। एक बार कुछ दुखी दरिद्र लोग मि० ब्राइड के पास ऐसा उपाय पूछने के लिए गए, जिससे वे अमीर हो जाएँ। मि० ब्राइड ने उनसे कहा—"सज्जनों ! आप लोग कठिन परिश्रम करें, किसी काम को छोटा समझकर शर्म न करें कम खर्च करें और ईमानदारी से रहें। इसी से आप लोग अमीर बन जाएँगे। मैं किसी जादू से अमीर नहीं बना हूँ और न किसी जादू के बारे में जानता हूँ जो आप लोगों को अचानक छप्पर फाड़कर धनवान बना दे। यदि आप धनी बनना चाहते हैं, तो उन मनुष्यों की कार्य प्रणाली का अनुकरण कीजिए, जो गरीबी के साथ निरंतर लड़े हैं और अपने बाहुबल से उसे पछाड़कर समृद्धि तक पहुँचे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शास्त्र कहता है कि 'उद्योगिनंपुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी: ।' लक्ष्मी उद्योगी सिंह पुरुषों को प्राप्त होती है। भाग्य का रोना रोने वालों को नहीं। धनी वे बन सकते हैं जो साहसी, परिश्रमी, उद्योगी और विशाल हृदय है। एक विद्वान का मत है, धन सिंहनी का दूध है। सिंहनी का दूध सोने के पात्र में दुहा जाता है, यदि और किसी बरतन में दुहा जाए, तो वह पात्र फट जाता है। लक्ष्मी उन्हें ही प्राप्त हो सकती है, जो उसके पात्र हैं। कुपात्रों को पहले तो वह प्राप्त नहीं होती, यदि मिल भी जाए, तो उसे नष्ट करती हुई, बहुत जल्दी चली जाती है। इसलिए जो व्यक्ति धनवान बनना चाहता है, सिंहनी का दूध पात्र में रखना चाहता है, उसे चाहिए कि पहले स्वर्ण-पात्र बने।

सुंदर भविष्य की आशा करना एक बड़ा ही उत्तम सद्‌गुण है। जिसके पास पारस मौजूद है, वह लोहे जैसी परिस्थितियों को सोने में बदल सकता है। यदि आप अस्वस्थ हैं, निर्धन हैं, विपत्तिग्रस्त हैं, तो कुछ भी चिंता मत कीजिए। यदि आपको अपने सुनहरी भविष्य की आशा है, परमात्मा की दयालुता और आत्मा की योग्यता पर विश्वास है, तो निश्चय ही सब बुरी परिस्थतियाँ बहुत शीघ्र बदल जाएँगी और वैसा ही सुंदर भविष्य प्राप्त होगा, जैसा आप चाहते हैं। आपको दरिद्र बनाने वाले दो शत्रु हैं—अनुत्साह और संदेह। इन दोनों साँपों को आस्तीन में पालकर सुख के साथ नहीं सोया जा सकता। मेरे करने से कुछ न होगा, इस काम में सफलता मिलना कठिन है। इस प्रकार की विचारधारा को रखने का स्पष्ट अर्थ यह है कि दु:ख दारिद्रय के साथ आपकी गहरी दोस्ती है और उनका किसी प्रकार साथ छोड़ना नहीं चाहते। इंजीनियर जब कोई मकान बनाना चाहता है, तो उसका पूरा-पूरा नक्शा पहले अपने मस्तिष्क में खींच लेता है। चित्रकार चित्र की रूपरेखा पहले मन में अंकित कर लेता है, बिना इसके न तो मकान बन सकता है और न चित्र। क्या आप सुंदर भविष्य की आशा अंत:करण में धारण किए बिना ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समृद्ध होना चाहते हैं ? ऐसा न हो सकेगा। यदि धनी बनना है तो पहले अपने मन को धनी बनाइए। धनवान होने के सुख-स्वप्न देखिए।

कोई पाठक हमारे इस कथन पर आश्चर्य प्रकट करेंगे कि विचार बदलने मात्र से ही धन की प्राप्ति कैसे हो सकती है ? उन्हें जानना चाहिए कि मानसिक दरिद्रता दूर होने पर वह लक्ष्मी का पात्र बन जाता है; उद्योग और उत्साह की लहरें उसके खून के साथ दौरा करने लगती हैं; आत्मविश्वास की विद्युत शक्ति उसके स्नायु जाल में संचरित होने लगती है; उसके परिणामस्वरूप वह सामने आए हुए अवसरों से भरपूर लाभ उठा लेता है। उसकी वृत्तियों में कुछ ऐसा असाधारण परिवर्तन हो जाता है कि दुनिया उसे प्यार करने लगती है और हर तरफ से सहयोग एवं सहायता प्राप्त होना आरंभ हो जाता है। देखा जाता है कि इस परिवर्तन के कारण बहुत ही हीन अवस्था के व्यक्ति कुछ ही काल में सुसंपन्न बन जाते हैं।

यह कथन सत्य से परिपूर्ण है कि—"ईश्वर उसकी मदद करता है जो अपनी मदद आप करता है।" इस कथन के पीछे सृष्टि के आरंभ से लेकर अब तक के समय का मनुष्य जाति का गहरा अनुभव है। जो अपने पैरों पर खड़ा हुआ—उसने उन्नति की और जो हताश होकर बैठ गया उसने अस्तित्व गँवा दिया। संसार में अनेक व्यक्तियों ने लघुता में से उठकर अपने-अपने उद्योग द्वारा महत्ता प्राप्त की है। तमिल भाषा के अमर काव्य 'चिक्कुरल' के रचयिता ऋषि तिरुवल्लुवर परिया नाम की अछूत जाति में पैदा हुए थे। संत कबीर जुलाहे, रैदास चमार, नामदेव दर्जी और कृष्णदास शूद्र थे। उस जमाने में अछूतों और छोटी श्रेणी के लोगों के लिए उन्नति करना बहुत कठिन था, तो भी इन महापुरुषों ने अपने प्रयत्न से ज्ञान उपार्जन किया और नररत्न कहलाए। संसार के अद्वितीय कूटनीतिज्ञ महापुरुष चाणक्य बड़ी गरीबी का जीवन व्यतीत करते थे। एक बार वे राजा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नंद की राज्य सभा में गए, तो फटे-टूटे कपड़ों को देखकर दरबारियों ने बड़ा उपहास किया था। इतनी दरिद्रता रहते हुए भी वे महत ज्ञान का संपादन करते रहे। अस्त्र-शस्त्र विद्या के धुरंधर द्रोणाचार्य इतने गरीब थे कि अपने बच्चे अश्वत्थामा को दूध तक न पिला सकते थे और चावल का पानी देकर उसकी दूध की बालहठ शांत करते थे। संत सूरदास, तुलसीदास और चैतन्य महाप्रभु की दरिद्रता प्रसिद्ध है। संस्कृत और बंगला के धुरंधर विद्वान ईश्वरचंद्र विद्यासागर, जब विद्या अध्ययन करते थे, तो उनके पास इतना पैसा भी न था कि रात को पढ़ने के लिए तेल तक जुटा सकें। अतः उन्हें सड़क पर लगी रहने वाली बत्तियों की सहायता से पुस्तकें पढ़नी पढ़ती थीं। मद्रास हाईकोर्ट के जज सर ध्रुवस्वामी अय्यर ऐसे गरीब घर के थे कि बारह वर्ष की उम्र में ही एक रुपया मासिक की नौकरी करने के लिए मजबूर होना पड़ा था। अकबर के दरबारी बीरबल और टोडरमल बहुत गरीब-दरिद्र के घर में जन्मे थे। पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह का प्रधान सरदार फूलसिंह आधी उम्र तक पेट भरने की चिंता में डूबा रहा। यह लोग यद्यपि ऐसे घरों में जन्मे थे, जहाँ उन्नति करने योग्य साधनों का करीब-करीब सर्वथा अभाव था, तो भी उनकी उद्योगशीलता और महत्त्वाकांक्षाओं ने उन्हें ऊँचे स्थानों तक पहुँचा ही दिया। जस्टिस महादेव गोविंद रानाडे, श्री गोपाल कृष्ण गोखले, पं० मदनमोहन मालवीय, दादा भाई नौरोजी, महात्मा गांधी सरीखे महापुरुष मध्यम श्रेणी के घरानों में पैदा हुए, उनका ही परिश्रम था जिसने उन्हें साधारण से महान बनाया।

विदेशों में ऐसे उदाहरणों की भरमार है। योरोपीय देश उँगलियों पर गिनने लायक वर्षों में इतने उन्नतिशील हुए, इसका कारण वहाँ के निवासियों में उद्योगशीलता की लहर का आ जाना ही है। शेक्सपियर के पिता कसाई का काम करते थे और वह स्वयं ऊन कातता था, पीछे वह घोड़ी-घोड़ों की बेचा-खोची करने लगा और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नटविद्या में दिलचस्पी लेने लगा। ऐसी विषम परिस्थिति में रहते हुए उसने अंग्रेजी भाषा के सर्वोच्च नाटककार का स्थान प्राप्त किया है। बढ़ईगीरी करते-करते जॉन हंटर प्राणिशास्त्र का वेत्ता बना। ज्योतिषी केलयर भटियारे का लड़का था। आविष्कारक सर आर्कनाइट और चित्रकार टर्नर पहले नाईगीरी करके हजामत बनाकर पेट की ज्वाला बुझाते थे। वेन जानसन कन्नी-ब्रसूली लेकर राजगीरी करता था। दीवारें चिनता, पर साथ ही पुस्तकें पढ़ता, एक दिन वह प्रसिद्ध नाटककार हुआ। 'रिव्यू' के संपादक गिफडे और रेवेंडर लिंविगरटन कोली थे। अमेरिका के राष्ट्रपति एण्ड्रूज जॉनसन एक बार वाशिंगटन नगर में व्याख्यान दे रहे थे; तो किसी ने उन पर ताना कसा कि—"दर्जीगीरी की बात भूल गए क्या ?" जॉनसन ने इस पर कुछ भी बुरा न माना और उत्तर दिया कि 'मैं दर्जीगीरी की बात कभी नहीं भूल सकता, क्योंकि उसी पेशे से मैंने बहुत उम्र तक अपनी गुजर-बसर की है। आज मैंने वह पेशा छोड़ दिया है, तो भी उस समय के सद्गुण, सद्व्यवहार, अच्छा काम करना और समय की पाबंदी करना अब भी मुझमें मौजूद हैं। मुझे यह कहने में कोई झिझक नहीं कि इन तीन गुणों ने ही मुझे इस स्थान पर पहुँचाया है। दर्जीगीरी की याद दिलाना मेरे लिए तानाकशी का नहीं, वरन् गर्व का विषय है।" बुरर्टर का सुप्रसिद्ध धर्माचार्य डॉक्टर जॉन प्रीडाने एक बहुत गरीब घर में पैदा हुआ था। जब शिक्षा प्राप्त करने का कोई साधन उसे दिखाई न दिया, तो एक कॉलेज के छात्रावास में बावर्ची की नौकरी कर ली और साथ ही पढ़ता रहा, अंत में एक दिन वह इतने उच्च पद पर पहुँचा। इंग्लैंड का अपने समय का सर्वोच्च जज सर एडमंड सर एडर्स पहले एक अदालत का चपरासी था। धीरे-धीरे कानून पढ़ता रहा और उन्नति करता गया।

जब किसी मनुष्य में महत्वाकांक्षा जाग्रत् होती है और वह चाहता कि कोई बड़ा काम करूँ या बड़ा बनूँ, तो उसकी इच्छा ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसके लिए अनेक प्रकार के साधन और सुविधाएँ इकट्ठा कर देती है। फर्गुसन कपड़ों के अभाव में भेड़ का चमड़ा ओढ़कर पहाड़ी पर चले जाते और आकाश का अध्ययन करते। इसी प्रकार के प्रयत्नों से उन्होंने खगोल विद्या सीख ली। सर जे० रेनाल्ड्स कहा करते थे कि—"हर कोई व्यक्ति बुद्धिमान एवं सुयोग्य बन सकता है, यदि वह परिश्रम और धैर्य को अपना ले। मेहनत वह खराद है, जो उन्नत बुद्धि को और अधिक चमकाती है एवं मंद बुद्धि की मंदता को दूर कर देती है।" सर बक्सटन का मत है कि—"असाधारण उद्योग करने से साधारण साधनों से भी बेड़ा पार हो सकता है।" यह न सोचना चाहिए कि हमारे पास धन, विद्या की कमी है, इसलिए हम क्या कर सकते हैं ? कालिदास जवान उम्र तक निरक्षर थे। विवाह होने पर जब उनकी पत्नी ने ताना दिया तो पढ़ने लगे और अंत में अपने समय के सर्वश्रेष्ठ पंडित प्रख्यात हुए। रेलगाड़ी के आविष्कारक स्टीफिन्सन जवानी तक फूटा अक्षर न जानते थे, जॉन हंटर ने गदह-पचीसी बीत जाने पर ओलम् सीखी। रामकृष्ण परमहंस, संत कबीर, छत्रपति शिवाजी, महाराणा रणजीतसिंह और सम्राट अकबर नहीं के बराबर पढ़े-लिखे थे, पर उससे उन्नति में बाधा नहीं पड़ी।

जिस प्रकार किसी वस्तु को प्राप्त करने की तीव्र इच्छा करना आवश्यक है, उसी प्रकार कठिनाइयों से न घबराने, असफलता से निराश न होने और विपत्ति में धैर्य धारण करने की भी जरूरत है, क्योंकि एक दिन में कोई मनुष्य सफल नहीं हो सकता। इच्छित उद्देश्य की प्राप्ति तभी होती है, जब वह परीक्षा कर लेती है कि यह मनुष्य इसका पाने का पात्र भी है या नहीं। सर हम्फ्रीडेवी ने कहा था कि—"मैं इस समय जितना चतुर हूँ, उतना कभी न था। मैंने जो कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं, वे भूलों, असफलताओं और त्रुटियों की सहायता से किए हैं।" वाशिंगटन ने जितनी लड़ाइयाँ जीतीं, उनसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ज्यादा हारे। मुहम्मद गौरी को भारतवर्ष में तब विजय प्राप्त हुई, जब वह सोलह बार पृथ्वीराज से पराजित हुआ। मोरौ कहा करता था कि—"मनुष्य ढोल के समान है, वह जितना ही पिटता है, उतना ही बजता है।" गायक कैरसिंमा से पूछा गया कि आपने अपना स्वर इतना मधुर कैसे बनाया ? तो उसने कहा—"परिश्रम और आपत्तियों की सहायता से।" चित्रकारी आपने कितने समय में सीखी ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए सर रेनाल्ड ने कहा—"समस्त जीवन में।" प्रोफेसर मारे ने कोयलों से जमीन पर अक्षर लिखना सीखा था, क्योंकि उसके पिता स्याही नहीं खरीद सकते थे। प्रोफेसर मोअर बचपन में किताबें खरीदने योग्य स्थिति में न थे, इसलिए किसी सहृदय लड़के की किताब कुछ समय के लिए उधार लेकर नकल करते थे और उसी से पढ़ लेते थे। डॉक्टर ली बचपन में बड़े गरीब और सुस्त थे, एक बार उनके अध्यापक ने झुँझलाकर कहा—"आज तक मेरे पास ऐसा रद्दी लड़का कोई पढ़ने नहीं आया।" यही रद्दी और मंद बुद्धि बालक अपने परिश्रम के बल पर एक दिन महान साहित्यकार सिद्ध हुए।

इस समय आपको अपनी बुद्धि मंद और योग्यता तुच्छ प्रतीत होती है, तो कुछ भी चिंता मत कीजिए और उत्साहपूर्वक परिश्रम में जुट जाइए, एक न एक दिन आपकी संपूर्ण कमियाँ दूर जो जाएँगी। प्रसिद्ध चित्रकार प्राइटोडी कोरटोना इतना मंद बुद्धि था कि उसे 'गधे का सिर' कहकर चिढ़ाया जाता था। न्यूटन अपने दर्जे में सबसे फिसड्डी लड़का था। ऐडम क्लार्क के घर वाले उसे 'महामूढ़' कहकर पुकारते थे। नाट्यकार शैरी की माता से उसके अध्यापक ने कहा—"ऐसे जड़ बुद्धि लड़के से मैं बाज आया, इसे घर ले जाइए।" सर वाल्टर स्कॉट के अध्यापक ने अपना यह मत घोषित कर दिया था कि 'यह लड़का जन्म भर बुद्धू रहेगा।' लार्ड क्लाइव जिसने भारत में अंग्रेज़ी राज्य स्थापित किया, ऐसी मूढ़ बुद्धि का था कि घर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वाले उससे तंग आ गए थे और पीछा छुड़ाने के लिए सात समुद्र पार हिंदुस्तान को भिजवा दिया था। नेपोलियन से उसके बचपन में कोई यह नहीं कहता था कि बड़ा होकर वह किसी काम का निकलेगा। डॉक्टर कैलमर्स और डॉक्टर कुक को उनके अध्यापकों ने स्कूल में यह कहकर निकाल दिया था कि 'इन पत्थरों से सिर मारना बेकार है।' मनुष्य जाति का महान सेवक जॉन हावर्ड लगातार सात वर्ष तक पढ़ता रहा, पर उसे फूटा अक्षर न आया। ये उदाहरण बतलाते हैं कि जन्म से ही यदि चतुराई न हो तो कोई हर्ज नहीं है, वह उद्योग द्वारा इच्छानुसार बढ़ाई जा सकती है। लगातार चलते रहने वाला कछुआ आलसी खरगोश की अपेक्षा जल्दी रास्ता पार कर लेता है। महाशय डेवी कहते थे कि—"जैसा कुछ मैं हूँ वैसा मैंने अपने को खुद बनाया है।" अध्यापक या अभिभावक किसी मनुष्य की उन्नति में उतनी सहायता नहीं कर सकते, जितनी कि वह खुद अपनी कर सकता है।

लेडी मानगेट ने कहा था—"नम्रता खुद तो बिना मोल आती है, पर उससे दूसरी सब चीजें खरीदी जा सकतीं हैं।" महारानी एलिजाबेथ का कथन है कि—"अगर आप में विनयशीलता और मधुर भाषण के गुण हों, तो लोगों के दिलों को जीत सकते हैं और उनका प्रेम तथा धन दोनों ही प्राप्त कर सकते हैं।" विलियम ग्रांट और चार्ल्स ग्रांट नामक दो किसान बालक एक गाँव में रहते थे। पास की नदी में एक बार बाढ़ आई तो उनका घर-घूरा और खेतिहार सब बह गए। बेचारे अनाथ निस्सहाय होकर परदेश के लिए निकल पड़े। छोटे होने के कारण ज्ञान बहुत कम था, इसलिए वे नहीं जानते थे कि कहाँ जाया जाए? चलते-चलते वे एक पहाड़ी पर पहुँचे और वहाँ दिशा भी भूल गए। कुछ देर सोचने के बाद उनने एक लकड़ी खड़ी की और तय किया कि जिधर यह गिरेगी उसी दिशा में चल पड़ेंगे। लकड़ी गिरी और वे चल पड़े। चलते-चलते एक छोटे कस्बे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में पहुँचे, वहाँ पर एक छापेखाने में उनके सद्गुणों के कारण मालिक पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने छापेखाने की सारी कला उन्हें समझा दी। लड़के बड़े हुए तो उनने अपने स्वतंत्र छापेखाने खोले। भले स्वभाव के कारण ग्राहक बहुत आने लगे और काम उन्नति करता गया, अंत में वे भारी मिल चलाने लगे और अपार संपत्ति कमाने में समर्थ हुए, उन्होंने उस पहाड़ पर लकड़ी गिरने के स्थान पर स्मारक स्वरूप एक मीनार बनवाई। सज्जनों के लिए ऐश्वर्य प्राप्त करना कुछ भी कठिन नहीं है। सज्जन शब्द की परिभाषा करते हुए एक विद्वान ने कहा है कि "जो ईमानदार हो, भलमानस हो और नम्र हो, वही सज्जन है। किसी व्यक्ति ने चाहे सब-कुछ खो दिया हो, पर उसके पास यदि साहस, आशा, आत्मविश्वास, धर्मपरायणता और भलमनसाहत मौजूद है तो समझना चाहिए कि उसने कुछ नहीं खोया और वह अभी भी धनवान है। क्योंकि दुनिया उस पर विश्वास करती है क्या विश्वासभाजन बनना किसी बड़ी अमीरी से कम है? वह विपत्ति में भी प्रसन्न रहता है, क्योंकि सज्जनता का सौभाग्य उसके साथ है।"

जो कार्य आपने आरंभ किया है, उसे दृढ़ता से आरंभ कीजिए और अपने धैर्यपूर्वक उसके फल की प्रतीक्षा के लिए ठहरिए। बहुत-से मनुष्य आज के काम का कल परिणाम देखते हैं और बालक की नकल बनाते हैं, जो बीज को बोकर घंटे-घंटे बाद उसे इसलिए उखाड़ता था कि देखें अभी उगा या नहीं। बालक खड़ा होने का कार्य तब पूरा कर पाता है, जब वह बीसियों बार गिरता है और असफलता की परवाह न करके उत्साह के साथ उद्योग जारी रखता है। सिकंदर यद्यपि बहुत बार युद्ध में पराजित हुआ तो भी लड़ाई के अंत में सदा वही विजयी हुआ। उष्ण कटिबंध देशों में लोग इसलिए अधिक स्वस्थ और सुंदर नहीं होते कि उन्हें अपना भोजन आसानी से मिल जाता है और कठोर परिश्रम से बचे रहते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिक बतलाते हैं कि यदि पचास एकड़ भूमि की सूर्य किरणें एकत्रित कर ली जाएँ, तो उनसे इतनी बिजली मिल सकती है कि संसार के समस्त कल-कारखानों को चलाया जा सके। परंतु असंख्य एकड़ भूमि पर यह किरणें फैली रहती हैं और उससे एक छोटा-सा यंत्र भी नहीं चलता। मनुष्य में अनंत शक्तियों का भंडार छिपा पड़ा है, परंतु बिना उसे समुचित स्थिति से काम में लाए, वह व्यर्थ ही नष्ट होता है।

महात्मा होलमील कहते हैं कि—"जब कोई साहसी और दृढ़प्रतिज्ञ तरुण संसाररूपी सांड़ के सामने खड़ा होकर बहादुरी के साथ उसके सींग पकड़ लेता है, तो वह आश्चर्य के साथ देखता है कि वे सींग टूटकर उसके हाथ में आ गए। उस समय उसे अनुभव होता है कि यह सींग वास्तव में उतने भयंकर नहीं हैं जितना कि उन्हें समझा जाता है, यह तो केवल आलसी और डरपोकों को डराने के लिए लगाए गए हैं।"

एक विद्वान का कथन है कि—"मनुष्य की आधी बुद्धि उसके साहस के साथ चली जाती है। यदि आप आपत्तियों को देखकर घबरा गए, तो समझ लीजिए कि संकटरूपी भेड़िये के सामने आपने अपनी लाश को कुतर खाने के लिए छोड़ दिया है।"

एक निराश सेनापति ने सिकंदर से कहा, "मुझसे यह नहीं हो सकेगा।" संसार विजेता सिकंदर ने घृणा के साथ उसे उत्तर दिया—"चल उठ, भाग जा अभागे ! यहाँ से काला मुँह कर, मूर्ख ! उद्योगी के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।"

एक विद्वान का कथन है कि कीर्ति, प्रतिष्ठा और उच्च पद यह अपने ही प्रयत्न से प्राप्त होते हैं। न तो वह पैत्रिक संपत्ति या दैवयोग के रूप में मिलते हैं और न धन से मोल लिए जा सकते हैं। यह फल अध्यवसाय, उद्योग और दृढ़ चरित्र की बेलों पर ही लगते पाए जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक गरीब लड़का नदी के किनारे खड़ा हुआ धीवरों का मछली पकड़ना देख रहा था। वह धीवरों के पास गया तो देखा कि उन्होंने कई टोकरे मछली पकड़ रखी है। लड़के ने एक ठंडी साँस भरी—"काश इनमें एक टोकरी मुझे मिल जाती तो बेचकर कई दिन के लिए भोजन सामग्री खरीद लेता।" एक सहृदय धींवर ने उसकी बात सुन ली और उसे बुलाकर कहा कि यदि तुम एक-दो घंटे मेरा काम करो तो तुम्हे एक टोकरी मछली दे सकता हूँ। लड़का रजामंद हो गया। धींवर ने एक वंशी (मछली पकड़ने का काँटा) लड़के के हाथ में दी और पास के घाट पर बैठाकर आदेश किया कि जो मछली फँस जावें उन्हें उठाकर इस टोकरे में रखते जाना। लड़का वैसा ही करने लगा। दो घंटे भी पूरे न हुए थे कि वह टोकरी भर गई, तब धींवर ने उसे वह टोकरी दी और कहा—"मैं तुम्हारे ही धन से अपना वचन पूरा करता हूँ और तुम्हें उपदेश देता हूँ, कि जब दूसरों को अपनी इच्छित वस्तु प्राप्त करते हुए देखो तो मूर्खों की तरह खड़े-खड़े तमाशा न देखो, वरन् अपना जाल लेकर तुम भी बैठ जाओ।"

मितव्ययता

एक मनुष्य किस प्रकार पैसा कमाता है, खर्च करता है और बचाता है—यह देखकर उसकी बुद्धि की परीक्षा की जा सकती है। यह ठीक है कि धन संग्रह के लिए ही नहीं, पर यह भी ठीक है कि पैसों को तुच्छ न समझना चाहिए। कहते हैं कि खाली बोरा सीधा खड़ा नहीं रह सकता। जब तक उसका पेट न भरा होगा, तब तक वह बार-बार खड़ा करने पर भी अपने पैरों पर ही बैठ जाएगा। समझदारी, उदारता, दूरदर्शिता जैसे महत्त्वपूर्ण गुण ईमानदारी से संबंध रखते हैं। दरिद्र मनुष्य कभी-कभी विवश होकर भी अन्याय, अधर्म एवं अकरणीय कामों को करने में प्रवृत्त होते देखे जाते हैं। चतुर कौन है ? इस प्रश्न के उत्तर में एक विद्वान ने कहा है

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कि—"जो पैसे को उचित रीति से कमाना, खर्च करना और बचाना जानता है, वही बुद्धिमान है।"

पैसों का वही सदुपयोग कर सकता है और बचा सकता है, जो मेहनत करके कमाता है। यदि कहीं से झटके का माल हाथ लग जाए तो वह फजूलखर्ची में उड़ जाएगा। कहते हैं, कि चोरों के महल नहीं देखे जाते। ठीक भी है जिसने उपार्जन में श्रम नहीं किया, वह उसकी कदर नहीं कर सकता और भगवती लक्ष्मी इतनी निर्लज्ज नहीं है जो अपमानित होकर भी किसी के द्वार पर अधिक दिन तक पड़ी रहें। कुछ व्यक्ति ऐसे भी अदूरदर्शी देखे जाते हैं, जो आज की कमाई को आज ही खर्च कर देते हैं। शहरों के कई धोबी, मोची, ताँगेवाले या ऐसे ही दूसरे कारीगर पचास-सौ रुपया रोज कमाते हैं, पर दूसरे दिन के लिए कुछ नहीं बचता। ताड़ी, शराब, गाँजा या इधर-उधर की मटरगश्ती में उनकी सारी कमाई खर्च होती रहती है। जीवन भर कमाते हैं, पर न तो बच्चों को शिक्षा दिला पाते हैं और न व्यवस्थित सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं। मरने के बाद इतना भी नहीं छोड़ जाते कि बाल-बच्चे साल-छह महीने बैठकर खा सकें। फजूलखर्ची एक प्रकार का देशद्रोह है, क्योंकि इससे बेकारी, निराश्रयता, लाचारी और दुर्वृत्तियों की वृद्धि होती है। सुकरात कहा करते थे—"जो देश की उन्नति करना चाहते हैं, वे पहले अपनी उन्नति करें। अपव्ययी मनुष्य कोई बड़ा काम न कर सकेंगे और न आत्मसम्मान ही कायम रख सकेंगे।" मि० काबडेन ने एक बार गरीबों को संबोधित करते हुए कहा था—"दुनिया में अमीर-गरीब का भेद नहीं है। अमीर-गरीब का यथार्थ नाम मितव्ययी और अपव्ययी है। जो लोग बचाने के सिद्धांत पर काम करते हैं, वे एक दिन अवश्य समृद्ध बन जावेंगे और जिन्हें फूँकने व उड़ाने का चस्का है, वे गरीब रहेंगे। खर्च करने में सावधान रहने वाले लोगों ने मिल, कारखाने और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जहाज बनवाए हैं, एक तुम हो जो शराब पीने और दूसरी बेवकूफी करने में अपने पैसे समाप्त कर देते हो।"

सुसंपदा बनने के लिए मितव्ययता की बड़ी जरूरत है। इसके लिए किसी बड़ी योग्यता की जरूरत नहीं है। "अत्यंत आवश्यक वस्तुओं को उचित मात्रा में खरीदना" इस सिद्धांत को ध्यान में रखकर कोई भी मनुष्य ठीक प्रकार से गृह प्रबंध कर सकता है, किंतु इसका अर्थ कंजूसी नहीं। कल के लिए जमा रखने की इच्छा से जो आज भूखा मरता है, वह मूर्ख है। मितव्ययी मनुष्य धन को ईश्वर समझकर पूजा नहीं करता, वरन् उसको सावधानी से शस्त्र की भाँति वहीं उपयोग करता है, जहाँ उसके करने की जरूरत है। आप कंजूस नहीं, किफायतशार बनिए, क्योंकि किफायतशारी दूरदर्शिता की पुत्री, संयम की बहन और स्वतंत्रता की माता है। यह हमारे चरित्र, आनंद और प्रतिष्ठा की रक्षा करती है। जब फ्रांसिस हानरी गृहस्थी में पड़ा तो उसके पिता ने कहा, "पुत्र ! मेरा आंतरिक आशीर्वाद है कि तू प्रसन्न रहे। इस हर्ष के समय पर एक रत्न तुझे उपहार दे रहा हूँ और वह है किफायतशारी का उपदेश। ओछे आदमी इसका महत्त्व नहीं समझते और हँसी उड़ाते हैं, पर मैंने चिरकालीन अनुभव से यह जाना है कि कोई गृहस्थ यदि सुखपूर्वक अपना जीवन बिताना चाहता है, तो उसे खर्च करते समय बहुत सावधानी से काम लेना चाहिए। बेटा, यदि तुम मेरे इस रत्न को सँभालकर रखोगे, तो यह तुम्हें सौभाग्य की तरह हर समय मदद करेगा।" हर आदमी का धर्म है कि अपनी आमदनी पर गुजर करे, जो ऐसा नहीं करता, वह भीख माँगेगा, किसी पर भार बनेगा या बेईमानी करेगा। हम ऐसे कई आदमियों को जानते हैं, जिन्होंने पुरानी संचित कमाई को नाच, तमाशे में फूँक दिया और शिर धुन-धुनकर पछताते रहे। इन चटोरी आदत के व्यक्तियों को वासनाएँ तृप्त करने के लिए जब अपने पास धन नहीं दिखाई देता, तो ऐसे कार्य करने को उद्यत हो जाते हैं, जिनसे उनके लोक और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं। यदि आरंभ से ही उन्होंने फजूलखर्ची के दुर्गुण को न अपनाया होता, तो पतन के गहरे गर्त में गिरने के लिए उन्हें विवश न होना पड़ता।

एक पैसा बहुत छोटी वस्तु है परंतु करोड़ों गृहस्थों का सुख इस एक पैसे को जमा करने और ठीक अवसरों पर खर्च करने में निर्भर है। जो एक पैसे का दुरुपयोग करता है, वह एक रुपये का भी कर सकता है। यदि हम इन पैसों को बचाते रहें, तो हमारी शक्ति बढ़ जाएगी और भविष्य को दूने वेग के साथ सुधार सकेंगे। कई बार हम सस्ती के प्रलोभन में आकर बेकार वस्तुओं को खरीद लाते हैं, यह एक प्रकार की फजूलखर्ची है। आप उन चीजों को खरीदिए जिनकी वास्तव में जरूरत है। जो वस्तु काम में नहीं आती, उसे भूलकर भी मत खरीदिए चाहे वह कितनी ही सस्ती क्यों न हो ! टामस राइस नामक एक परोपकारी कार्यकर्ता ने हजारों दुश्चरित्र स्त्री-पुरुषों को सुधारकर उन्हें भले और प्रतिष्ठित नागरिकों के रूप में बदल दिया था। वह अपनी डायरी में लिखता है—स्वेच्छा से बहुत कम आदमी बुरे काम करते हैं, क्योंकि हर एक को अंतरात्मा कुकर्म करने पर उसे धिक्कारती है। अधिकांश मनुष्य अपनी जरूरतें या तृष्णाओं से मजबूर होकर चोरी, ठगी करते हैं। यदि आदमी को काम में लगा दिया जाए और उसे खर्च की ठीक व्यवस्था करना सिखा दिया जाए, तो उसकी आधी बुराइयाँ दूर हो जाएँगी। टामस एक मिल में काम करता था, पर जब उसे फुरसत मिलती, तो तथाकथित बुरे लोगों के पास जाता और अपने मधुर स्वभाव से उन्हें इस बात के लिए रजामंद करता कि वे उसकी सहमति से ही खर्च किया करें। ऐसे व्यक्ति यदि बेकार होते, तो उनके लिए काम तलाशकर देता और रोज जाकर उन्हें किफायतशारी का पाठ पढ़ाता। आज उन्होंने जो खर्च किया उनकी समालोचना करता और दूसरे दिन के लिए बजट बना जाता। इस प्रकार कुछ दिनों में किफायतशारी की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आदत पड़ जाती और वे उन सब दुर्गुणों से छुटकारा पा जाते जो फजूलखर्ची के कारण उत्पन्न हुए थे। उसने सादगी की आदत सिखाकर ऐसे अनेक नौजवान लड़के लड़कियों को कुमार्गगामी बनने से बचाया जो तड़क-भड़क से मुग्ध होकर अपना कर्तव्य भूल बैठे थे और पतन की ओर चलने लगे थे।

थोड़ा-थोड़ा जमा करने से बहुत इकट्ठा हो सकता है। ईरान का एक करोड़पति आस्टर ओल्ड शुरू में बड़ी गरीबी का जीवन व्यतीत करता था, वह जब दारू विक्रेता कि दुकान की तरफ जाता तो वहाँ पड़े हुए बोतलों के काग बीनकर जेब में रख लाता। आठ वर्षों में यह काग इतने जमा हो गए कि सौ रुपये में बिके। इसी रुपये से कारोबार बढ़ाकर वह उन्नति करता गया और अंत में करोड़पति होकर मरा।

दुष्ट बुद्धि के लोगों का धनवान होना ही उनके नाश का कारण है। पैसा पैदा करना कितना ही सरल क्यों न हो, उसको ठीक तरह रखना संसार में सबसे कठिन है। धन को ठीक प्रकार खर्च करना बहुत कम लोग जानते हैं। जिस पैसे से जीवन की महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ प्राप्त की जा सकती हैं, देखा गया है कि लोग उसे यों ही व्यर्थ बातों में उड़ा देते हैं, ऐसे मनुष्यों की आय चाहे कितनी ही अधिक क्यों न हो, सदैव दरिद्रता का कष्ट भोगेंगे।

धन क्या है ?

धनवान बनने से पूर्व इस बात पर विचार करना चाहिए कि धन, क्या है और उसे किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है ? रुपया-पैसा, चाँदी-ताँबे के टुकड़े मात्र नहीं हैं और न ये सौभाग्य के साथ आते एवं दुर्भाग्य के साथ जाते हैं। प्राचीनकाल में रुपया-पैसा का चलन न था, वस्तु से वस्तु का या श्रम से श्रम का परिवर्तन होता था। जैसे कोई आदमी आठ घंटे शारीरिक परिश्रम करके उसका फल किसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यक्ति को दे, तो वह व्यक्ति बदले में पाँच सेर अन्न देगा। यह श्रम से वस्तु का परिवर्तन हुआ। वस्तु से वस्तु का परिवर्तन यह हुआ कि सात सेर गुड़ के बदले में एक सेर घी मिल जाए। वस्तुओं को रखने, लाने, ले जाने में कठिनाई होती थी, इसलिए इसका माध्यम रुपया-पैसा बनाया गया। वस्तुएँ भी परिश्रम से ही प्राप्त होती हैं, इस प्रकार देखा जाए, तो अदृश्य परिश्रम तत्त्व का दृश्य स्वरूप धन है। धन ही वस्तु है। एक महीना नौकरी करने पर एक हजार रुपये मिले, इसका अर्थ है, एक हजार रुपये से खरीदी जाने वाली वस्तुएँ मिलीं। धन उपार्जन का अर्थ हमें यह न समझना चाहिए कि रुपया-पैसा कोई अचानक मिलने वाली वस्तु है और उसे यों ही कहीं पड़ी प्राप्त कर लेंगे। मान लीजिए कि आपको एक घंटा काम करने पर आधी सेर अन्न मिलता है और आप चाहते हैं कि हमारे पास पाँच मन अन्न इकट्ठा हो जाए, तो इसके लिए आपको दो उपाय करने पड़ेंगे। अधिक परिश्रम और कम खर्च। दस घंटा परिश्रम करेंगे तो चार सेर अन्न बचता जाएगा। इस प्रकार २५ दिन में पाँच मन अन्न इकट्ठा हो जाएगा। संग्रह करने का सीधा-सच्चा यही एक तरीका है।

यदि आप कम समय में अधिक धन जमा करना चाहते हैं, तो उपार्जन शक्ति बढ़ाइए। केवल शारीरिक परिश्रम से ही नहीं, वरन् मानसिक योग्यता और परिश्रम के बदले में भी पैसा मिलता है। सच बात यह है कि शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम का महत्त्व हजारों गुना अधिक है। बोझा ढोने वाला एक निश्चित सीमा से अधिक पैसा नहीं कमा सकता, परंतु बुद्धि के श्रम के बारे में कोई प्रतिबंध नहीं है। कुली की अपेक्षा व्यापारी शरीर से कम मेहनत करता है, किंतु बुद्धि द्वारा अधिक काम करता है। कामों के भी छोटे-बड़े दर्जे होते हैं। जैसे एक पंखा खींचने वाले की अपेक्षा मिल की मशीन पर काम करने वाले मजदूर को अधिक तनख्वाह मिलती है, उसी प्रकार साधारण बुद्धि की अपेक्षा विशेष योग्यता प्राप्त बुद्धि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का विशेष महत्त्व होता है। जो लोग बड़ी तेजी से पैसा कमाते हैं, वह भी उनकी बुद्धि की उत्तमता का मूल्य ही है।

सद्‌गुण तीक्ष्ण बुद्धि से भी अधिक मूल्यवान है। बड़ी शारीरिक या मानसिक मेहनत करने एवं तीक्ष्ण बुद्धि या प्रकांड विद्या के बदले में अधिक पैसा मिलता है और उसका ठीक प्रकार खर्च करने से मनुष्य धनवान बन जाता है, परंतु सद्‌गुणों का महत्त्व इस सबसे ऊँचा है। ईमानदारी, उदारता, प्रेम, कर्तव्यनिष्ठा के साथ यदि कोई गुण न हो, तो भी कुछ हर्ज नहीं। मोटी बुद्धि के आदमी ऐसा कहते सुने जाते हैं कि यह बुरा जमाना है, इसमें बातूनी और बेईमान आदमी ही संपन्न हो सकते हैं, लेकिन उनका यह विचार भ्रममात्र है। काठ की हाँडी एक बार ही चढ़ सकती है। बेईमानी से एक-दो बार किसी को ठगा जा सकता है, पीछे कोई आदमी पास भी खड़ा नहीं होता। सत्य में इसी से विपरीत गुण है, आरंभ में सत्यनिष्ठ की आमदनी भले ही कम हो, पर अंत में झूठे आदमी की अपेक्षा अधिक लाभ में रहेगा। अमरिका के एक प्रसिद्ध धनकुबेर का कथन है कि—"हमारे कारोबार ने इतनी उन्नति खरे व्यवहार के कारण की है। हमने खराब माल देकर या अधिक कीमत वसूल करके आज तक किसी ग्राहक को नाराज नहीं किया।" एक दूसरे कारखानेदार का कहना है कि—"कम मुनाफा, अच्छा माल और सद्व्यवहार" यही गुप्त सिद्धांत हैं, जिन्हें अपनाकर हमारा छोटा-सा कारखाना इतना बड़ा हो गया है। बाजार का विश्वास जिसके बल पर उधार मिल जाता है, बिना ईमानदारी के प्राप्त नहीं हो सकता है ? थोड़े समय में अधिक लाभ की हवस से बेईमानी का व्यवहार करने वाला उस मूर्ख का भाई है जिसने एक दिन में मालामाल हो जाने के लाभ में रोज एक सोने का अंडा देने वाली मुरगी का पेट चीर डाला था।

दुःख की बात है कि लोग बुद्धि और परिश्रम को ही उपार्जन का साधन समझते हैं और यह भूल जाते हैं कि इन दोनों का मूल में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान चरित्र बल है। झूठे विज्ञापनबाजों की करोड़ों रुपया मूल्य वाली कंपनियाँ फेल होते देखी गई हैं, पर सच्चाई पर निर्भर रहने वाले छोटे-से व्यापारी का करोबार दिन-दिन समुन्नत होता जाता है। दुनिया सत्यनिष्ठ को मूर्ख भले ही समझे, पर ईश्वर के यहाँ देर है, अंधेर नहीं। धर्म पर आश्रित व्यक्ति की धर्म ही रक्षा करता है। सुदामा के लिए कृष्ण, नरसी के लिए साँवलिया, प्रताप के लिए भामाशाह, गौतम बुद्ध के लिए अशोक बनकर वह आ जाता है और उनके किसी काम को रुकने नहीं देता। सुदृढ़ व्यापार की नींव सदैव सच्चाई की शिला के ऊपर रखी जाती है। बुद्धिमान व्यापारी एक दिन में सबकी जेब काटकर अपना घर भर लेना नहीं चाहता, वरन् अपनी प्रामाणिकता सच्चाई और उत्तमता की संसार के सामने परीक्षा देता है। यह परीक्षा उसे समृद्ध बनने का प्रमाण-पत्र देती है।

यदि आप कोई ऐसा कारोबार कर रहे हैं, जिसमें ग्राहकों को धोखा देना पड़ता है या आप कोई ऐसी नौकरी कर रहे हैं, जिससे ग्राहक ठगने में अपना तन, मन लगाना पड़ता है, तो आज ही उसे छोड़ दीजिए। यदि आत्मा की आवाज को कुचलकर ही आप रोटी कमा सकते हैं, तो वह भूखों मर जाने से महँगा पड़ेगा। रेशमी कपड़े मत पहनिए, गाढ़े का टुकड़ा लपेट लीजिए, षटरस भोजन मत कीजिए, रूखी रोटी खाकर पानी पीजिए, आलीशान कोठी में मत रहिए, टूटी झोंपड़ी में गुजर कर लीजिए, पर अधर्म का पैसा मत लीजिए, क्योंकि जो संपत्ति दूसरों को रुलाकर ली जाती है, वह चीत्कार करती हुई विदा होती है। ऐसा धन किसी भी दृष्टि से धन नहीं कहा जा सकता। आप धनी बनिए, अपनी योग्यता और परिश्रमशीलता को बढ़ाइए, खर्च में किफायत कीजिए, पर साथ ही ईमानदारी को दृढ़ता से पकड़े रहिए। आप संपत्तिवान हो जाएँगे, चाहे आपके पास सौ पैसे ही जमा हों, पर वे सौ मुहरों की तरह आनंददायक होंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

व्यापार

यदि आप किसी कारोबार में लगे हुए हैं और उसमें सफलता प्राप्त नहीं हो रही है, तो एक दिन शांत चित्त से सोचिए कि इसका क्या कारण है ? देखा गया है कि प्राय: निम्न कारणों से असफलता प्राप्त होती है। (१) ऐसा काम करना जिसकी ओर जनता की रुचि न हो, (२) जिस श्रेणी के लोगों से व्यवहार होता है, उनकी हैसियत से नीची या ऊँची वस्तु रखना, (३) समय की अनुकूलता का ध्यान न रखना, (४) अपनी योग्यता, अनुभव के विपरीत काम करना, (५) उधार लेने-देने का व्यवहार करना, (६) स्वभाव में मधुरता और व्यवहार में ईमानदारी का अभाव होना, (७) ग्राहक को संतुष्ट करने योग्य चातुरी का अभाव, (८) आलस्य। यदि इन आठों बातों का ध्यान रखा जाए, तो कम पूँजी से चलाया हुआ व्यापार भी पर्याप्त लाभदायक सिद्ध हो सकता है। आप अच्छी तरह बारीक परीक्षा के साथ विचार कीजिए कि किन कारणों से कारोबार में क्षति हो रही है। क्योंकि रोग का निदान किए बिना ठीक तरह उसका इलाज नहीं हो सकता।

यदि किसी आकस्मिक कारण से परिस्थितियाँ विपरीत हो गई हैं, किंतु भविष्य में अच्छी आशा है, तो उस व्यापार को पकड़े रहिए और धैर्यपूर्वक थोड़े-बहुत दिनों और घाटा सहते रहिए। हो सके तो कोई छोटा-मोटा दूसरा काम गुजारे के लिए कर लीजिए और उस पुराने जमे हुए व्यापार को बनाए रहिए। कारण यह है कि काम जितना पुराना होता जाता है, उसका विश्वास बढ़ता जाता है और करने वाले की प्रामाणिकता प्रतीत होती है। रोज-रोज नए काम बदलने वाला अस्थिर चित्त और अविश्वासी समझा जाता है। थोड़े दिनों हानि सहकर भी यदि किसी लाभदायक व्यापार का ढाँचा बनाए रखा जाए, तो वह अंत में उस क्षति को पूरा कर देगा। परंतु यदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ऐसा प्रतीत हो कि यह कारोबार हमारा पैतृक या पुराना होते हुए भी समय से पीछे का हो गया है, तो उसमें सुधार करना चाहिए। जिस प्रकार का जनमानस आप से संबंध रखता हो उसकी आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उत्तम और सस्ती वस्तुओं का क्रय-विक्रय कीजिए। यदि दिल अपनी अच्छी योग्यता के संबंध में साक्षी न दे, तो पहले अनुभव प्राप्त कीजिए। किसी के साथ रहकर या छोटे पैमाने पर उसे आरंभ करके अनुभव प्राप्त किया जा सकता है। जो लोग समय की आवश्यकता को पहिचान लेते हैं और अवसर से लाभ उठा लेते हैं वे सदैव फायदे में रहते हैं। कारोबार में 'प्रदर्शन और विज्ञापन' यह दो इस युग की आवश्यकताएँ हैं। वस्तु को दिखाना और उसके गुण बताना बिक्री बढ़ाने का आवश्यक अंग है। प्रदर्शन के अनेक प्रकार हो सकते हैं, यहाँ उनकी बारीकी का वर्णन नहीं किया जा रहा है। जो वस्तु आपके पास है, उसे सबके सामने प्रकट रूप से दिखाने के लिए रखिए। इसमें एक बड़ा भारी मनोवैज्ञानिक रहस्य छिपा है। अवसर वस्तु को देखकर लोगों को अपनी आवश्यकता की याद आती है, चीजों को उत्तमता और सजावट के साथ रखना उनकी प्रामाणिकता सिद्ध करता है। अच्छे कपड़े पहनने वालों को ही बड़ा आदमी ख्याल किया जाता है। फटा कुर्ता पहने हुए नंगे पैर घूमने वाला महापुरुष बहुत समय और प्रतीक्षा के बाद पहचाना जाएगा, किंतु बढ़िया कपड़े उसके बड़े होने की गवाही हर घड़ी देते रहेंगे। इसलिए आप जो भी काम करते हों उसमें सफाई, सजावट और प्रदर्शन का पूरा ख्याल रखिए। इसके बिना इस युग में अच्छे व्यापार भी ठीक तरह से पनप नहीं पाते। दूसरा उपाय इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। सच पूछा जाए तो पहला उपाय दूसरे का ही एक अंग है। विज्ञापन में बड़ी शक्ति है। हम यह नहीं कह रहे हैं कि आप झूठी विज्ञापनबाजी करके लोगों की जेब काटिए। हमारे देश में कई धूर्त लोग झूठी चीजों के बड़े गुण वर्णन करते हैं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और कम पैसे की चीज के ज्यादा रुपये ऐंठते हैं, यह बहुत ही बुरा है। ऐसे लोगों पर दूसरी बार कोई विश्वास नहीं करता और जब उनकी बदनामी फैल जाती है, तो फिर उनका कोई काम नहीं चलता। सच्ची और उपयोगी वस्तुओं का परिचय कराना आवश्यक है, क्योंकि असंख्य लोग यह नहीं जानते कि उनकी आवश्यक वस्तु किस स्थान पर ठीक प्रकार से मिल सकती है। सच्चाई स्वयं एक अच्छा विज्ञापन है, पर उससे ख्याति धीरे-धीरे और परिमित क्षेत्र में फैलती है। जिन्हें जल्दी बहुत लोगों में और दूर-दूर तक अपनी वस्तु का परिचय करना हो, उन्हें विज्ञापन का सहारा लेना आवश्यक है। जिस प्रकार प्रदर्शन के संबंध में सजावट के सारे प्रकार इस छोटी पुस्तक में नहीं लिखे जा सकते, उसी प्रकार विज्ञापन के तरीके भी वर्णन नहीं हो सकते। जिन लोगों में आपकी वस्तु बिकती है या बेचना चाहते हैं, विचार कीजिए कि उनके पास तक सूचना कैसे पहुँच सकती है? यदि अशिक्षित ग्रामीणों तक कोई वस्तु पहुँचानी है, तो उसका प्रत्यक्ष प्रदर्शन करना होगा। इसी प्रकार शिक्षित लोगों तक अखबारों में विज्ञापन छपाकर पर्चे, पोस्टर आदि के द्वारा सूचना पहुँचाई जा सकती है। आजकल नित नए और अपनी बुद्धि के अनुसार जुदे-जुदे ढंग से विज्ञापन करने के तरीके निकल रहे हैं। आप भी अपनी स्थिति का अवलोकन करते हुए कोई तरीका पसंद कर सकते हैं। स्मरण रखिए, इस युग में प्रदर्शन और विज्ञापन व्यापार के दाएँ-बाएँ हाथ हैं। इसके अभाव में व्यापार की शक्ति बहुत ही शिथिल रहती है।

आप जिस व्यापार में लगे हुए हैं, उसे आलस्य, उदासीनता और आधे मन के साथ मत कीजिए, वरन् सारा चित्त उसी पर एकाग्र कर दीजिए। अपने व्यापार को एक खेल समझिए और उसमें पूरी-पूरी दिलचस्पी लीजिए, एकाग्रता में बड़ी विलक्षण शक्ति है। मन जब इधर-उधर न भटककर एक काम पर स्थिर होता है, तो उसमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उन्नति के नए-नए मार्ग अपने आप सूझ पड़ते हैं और ऐसे अवसर दृष्टिगोचर हो जाते हैं, जो अधूरा मन होने पर ध्यान में भी नहीं आते। जब समय मिले तब इधर-उधर व्यर्थ की बातों में मन न दौड़ाकर अपने काम के बारे में सोचिए, उसमें सुधार का मार्ग खोजिए। तलाश करने पर बहुत मिलता है, इसी खोज में किसी दिन ऐसी कुंजी मिल सकती है, जिसके द्वारा सोने से भरे हुए खजाने का ताला खुल जाए।

आजकल उधार देने-लेने का बड़ा प्रचलन है। यह बहुत ही बुरी बात है। किसी से इतने समय के लिए माल उधार लिया जा सकता है कि बेचकर उसका रुपया दे दें। इसे उचापत, हत्थू उधार, वायदा, आढ़त आदि के नाम से पुकारते हैं, इसमें कुछ हर्ज नहीं, यह तो व्यापारिक व्यवहार है। परंतु ब्याज पर अनिश्चित समय के लिए कर्ज लेना और उसे चुकाने की समुचित व्यवस्था न करना यह व्यापार का सत्यानाश है। ब्याज की हानि, मन की चिंता, आशंका, दबाव, प्रतिष्ठा में कमी, ये सभी बातें कर्ज लेने से बढ़ती हैं। ग्राहकों को उधार बाँटना, मानो रुपया और ग्राहक दोनों को गँवाना है। कर्जदार का मन ऐसा भारी हो जाता है कि वह फिर लेन-देन ही बंद कर देता है। एक विद्वान का कथन है कि "जिससे तुम्हें मित्रता रखनी है उसके साथ न तो वाद-विवाद करो और न उससे रुपये का लेन-देन करो।" देखा गया है कि खराब वक्त आने पर उधार बाँटने वाले तबाह हो जाते हैं और मित्रों को अपना शत्रु बना लेते हैं।

आपको अपने ग्राहकों से विनय, नम्रता और उदारता का व्यवहार रखना चाहिए। एक करोड़पति व्यापारी का कहना है कि—"ग्राहक हमारा मालिक है।" किसी भी ग्राहक से आप बुरा मत बोलिए। वे दुकानदार बड़े टुच्चे और कमीने हैं, जो ग्राहक के कुछ न लेने पर उसे खरी-खोटी सुनाते हैं। आप ग्राहक को अपना शिकार नहीं, वरन् अतिथि समझिए, वह जो कुछ जानना चाहता है, उसे इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ढंग से बताइए कि आपकी सचाई, प्रेम भावना और उदारता पर मुग्ध हो जाए।

चिड़चिड़े दुकानदार एक पैसे का सौदा खरीदने की इच्छा करने वाले ग्राहक को आधे पैसे का ही माल दे सकते हैं, किंतु मधुर स्वभाव के व्यापारी से वही ग्राहक एक पैसे की जगह दो पैसे का माल खरीद लेता है। ग्राहक को संतुष्ट कर देना यह ऐसा गुण है, जिसके कारण व्यापारी मालामाल हो सकता है। उत्तम स्वभाव के दुकानदार ग्राहक को इस प्रकार अपना बना लेते हैं कि वह उन्हें छोड़कर दूसरे के पास जा ही नहीं सकता। ग्राहक की निजी बातों में दिलचस्पी लेना, सलाह बताना, सहायता करना और कभी-कभी कुछ उपहार देना, ये बातें देखने में बहुत ही मामूली-सी प्रतीत होती हैं, परंतु इसके द्वारा बहुत अद्‌भुत और आशाप्रद परिणाम उपस्थित होते हैं। जो अपनी ईमानदारी और भलमनसाहत की छाप ग्राहक के मन में बिठाता है, समझिए कि वह साक्षात् लक्ष्मी जी को प्रसन्न करके अपने घर में बुलाता है। परिश्रम, उद्योग, मेहनत, वस्तुओं का जुटाना, फुर्ती के साथ अवसर को पकड़ना और मौके को न चूकना, यह ऐसी सावधानी है जो व्यापार का विकास करती है। बेचारे आलसी पुरुष उन बातों को कभी नहीं पा सकेंगे और सदा भाग्य को दोष देते रहेंगे।

कदाचित आपका व्यापार समय से पीछे की वस्तु हो गया हो और जमाने की लहर के साथ मेल न खाता हो अथवा उस विषय में अपनी योग्यता एवं रुचि कम हो, तो दूसरा काम बदल लेना चाहिए। यदि आप बहुत दिनों तक एक व्यापार को करते रहे हैं और अब उसे बदलने की आवश्यकता प्रतीत होती है, तो उससे मिलता-जुलता ही काम बदलिए। कारण यह है कि चिरकाल तक एक काम को करते रहने से मनुष्य को उसी प्रकार की शक्तियाँ विकसित हो जाती हैं, पीछे जाकर उन्हें दबाना और नई योग्यता प्राप्त करना कठिन होता है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किंतु वे नवयुवक जो अभी विशेष कार्य में दक्ष नहीं हुए हैं, अपनी रुचि के अनुसार आसानी से नया पेशा बदल सकते हैं। नया काम करने से पहले उस संबंध में कुछ अनुभव होना नितांत आवश्यक है, क्योंकि बिना इसके लाभदायक व्यापार में भी हानि की आशंका रहती है।

आप यदि वेतनभोगी नौकर नहीं हैं या भिक्षा नहीं माँगते, तो आपकी गणना व्यापारियों में करेंगे। हर व्यापारी को उपरोक्त बातों पर भली भाँति विचार करके अपने कार्य में यदि कुछ त्रुटि मिले, तो उसका संशोधन करना चाहिए। वे सुधार यदि दृढ़ता और स्थिर बुद्धि से किए जाएँगे, तो मरा हुआ व्यापार सजीव हो जाएगा और घाटे की दुकान नफा देने लगेगी।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

नौकरी

शायद आप बेकार हैं, बहुत खोजने से भी कोई काम नहीं मिलता। हर जगह से निराशाजनक उत्तर मिलते हैं, सोचते हैं कि आपको दुर्भाग्य ने घेर लिया है, व्यापार के लिए पूँजी नहीं, भूखों मरने की नौबत आ गई है, कुटुंबी और मित्रगण ताना देते हैं और निरादर करते हैं, यदि इस स्थिति ने आपको चिंतित कर रखा है तो और अधिक अपने को दुखी मत बनाइए और कुछ क्षण बैठकर हमारी बातों को ध्यानपूर्वक सुन लीजिए।

क्या आप समझते हैं कि दुनिया में काम की कमी हो गई है या आदमियों की जरूरत नहीं है ? यदि ऐसा समझते हैं तो भूल करते हैं। दुनिया में बहुत काम पड़े हुए हैं और हर जगह आदमियों की बड़ी भारी जरूरत है। हमें अनेक श्रीमान मनुष्यों से मिलने का अवसर मिलता है, वे सदा यही रोना रोते हैं कि क्या करें साहब, कोई आदमी ही नहीं मिला। आदमी के बिना सारे काम अधूरे पड़े हुए हैं। किसी को यदि वास्तव में कोई आदमी मिल जाता है, तो वह उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हीरे की तरह प्राणप्रिय समझकर रखता है। एक बड़े आदमी को कुछ आदमियों की जरूरत थी, उसने पत्रों में आवश्यकता छपवाई। नियत तारीख पर सैकड़ों उम्मीदवार आए। मालिक ने बारी-बारी से सबको बुलाया। उम्मीदवार लोग बी० ए०, एम० ए० के प्रमाण-पत्र दिखाते थे, पर उसने उनकी ओर निगाह भी न उठाई और सिर्फ उनकी चाल-ढाल तथा चेहरे के भावों पर दृष्टि डाली। जब सबसे मुलाकात हो चुकी तो उसने उन सबों को यह कहकर अहाते में से बाहर निकलवा दिया कि—"यहाँ आदमियों की जरूरत है, वनमानुषों की नहीं।" व्यावहारिकता का ज्ञान होने से मनुष्य-मनुष्य बनता है, अन्यथा उसमें और बंदर में अंतर नहीं रह जाता।

"झूठी शेखीखोरी—यह एक ऐसा दुर्गुण है, जिसने आज अधिकांश नवयुवकों का महत्त्वपूर्ण जीवन धूल में मिला दिया है। खाली पेट पर फैशन की टीमटाम बनाए हुए किसी लड़के को जब कोई भला आदमी देखता है, तो उसे बड़ी हँसी आती है। फैशन ही नहीं, दिमाग भी उनका साहब बहादुर हो जाता है। तीन फाँके मिलते होंगे, पर बात साहबी की ऐंठ में ही करेंगे। कई देशी फैशन के लड़के टोप-टाई तो नहीं पहनते, पर सिर को सातवें आसमान पर ही रखते हैं। जब किसी से बातें करेंगे, तो मानो ये किसी बड़े भारी सरदार खानदान के शहजादे हैं। यह शेखीखोरी निरंतर मस्तिष्क में रहने के कारण उन्हें ऐसा बेवश बना देती है कि वे किसी काम के नहीं रहते, मन में समझते हैं कि हम खूब बढ़-बढ़कर बातें करके दूसरों को उल्लू बनाते हैं, पर सच तो यह है कि अपने सिवाय वे किसी को उल्लू नहीं बनाते। शेखी को लेकर जो किसी के पास जाता है, घृणा लेकर वापस आता है। आप अच्छी तरह विचार कीजिए कि कहीं झूठ, बड़प्पन तो आपके मस्तिष्क में नहीं घुस बैठा है, यह ऐसा शत्रु है जो आगे-आगे चुगली करता चलता है कि—"इस नालायक को अपने पास भी मत बैठने दो।" मनुष्य का स्वभाव सादा और सीधा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

होना चाहिए। आत्मविश्वास, सच्चाई और विनय, इन गुणों को अच्छी तरह अपने स्वभाव में सम्मिलित कर लो। उत्साह, स्फूर्ति और प्रसन्नता को अपने चेहरे पर इस प्रकार पोत लो, जैसे कि फैंसी लड़के-लड़की पाउडर, क्रीम रंग-रोगन आदि पोतते हैं। यदि आप दूसरों पर अपनी सज्जनता और क्रियाशीलता प्रकट कर देते हैं, तो यदि वहाँ जगह होगी तो आपको अवश्य मिल जाएगी। उत्तम स्वभाव और भलमनसाहत की चाल-ढाल सबसे बड़ी सिफारिश है, वह पर्वत पर भी अपने लिए घर बना लेती है। आप आज बेकार हैं, तो चार दिन और बेकार रहिए, अपने सड़े-गले और दुर्गंधित स्वभाव को हटाकर दूर फेंक दीजिए ताकि एक ऐसे चुगलखोर से छुटकारा मिल जाए, जो कहीं पहुँचकर कुछ कहने से पहले चुगली कर देता है और काम नहीं बनने देता।

यदि आप बहुत तड़क-भड़क की पोशाक पहनते हैं, तो उससे नीचे उतरकर सादगी पर आ जाइए। यह समझना ठीक नहीं कि अपटूडेट फैशन के कारण प्रतिष्ठा बढ़ती है। आप हजारों रुपया मासिक तनख्वाह पाने वाले अफसरों की नकल मत कीजिए, उनकी स्थिति दूसरी है। एक बेकार आदमी की फैशनपरस्ती इस बात की साक्षी है कि इतना खर्च करने वाला जरूर चोरी करेगा और इतनी टीप-टाप के साथ नजाकत और हरामखोरी जरूर छिपी होगी। सादा किंतु स्वच्छ कपड़ों को ठीक तरह से पहनना, यह एक प्रामाणिकता और विश्वसनीयता का चिह्न है। सस्ता कपड़ा पहनना कुछ बुरा नहीं है, बशर्ते कि वह खूब धुला हुआ और साफ हो। अपने मस्तिष्क और चाल-ढाल सुधार लेने पर बेकारी की आधी कठिनाई दूर हो जाती है और सफलता पास आ जाती है।

जिन लोगों के पास पूँजी नहीं है, वे आरंभ में मजदूरी ही कर सकते हैं। आप में जिस प्रकार की शारीरिक या मानसिक मजदूरी करने की योग्यता है, तलाश कीजिए कि उस प्रकार की मजदूरी का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्षेत्र कहाँ है ? जिस जगह वह काम मिल सकता हो, वहाँ अपना संपर्क बढ़ाने का प्रयत्न कीजिए। जो लोग काम दे सकते हैं, उनकी कृपा प्राप्त कीजिए। कृपा प्राप्त करने का एक ही उपाय है, अपनी पात्रता सिद्ध करना। आप इस योग्य हैं, कि वैसी कृपा मिलनी चाहिए, तो अवश्य अवसर मिलेगा। शुद्ध हृदय से किसी के काम में सरलतापूर्वक मदद करना, अपनी सेवा भावना और क्रियाशीलता का परिचय देना दूसरों पर बड़ा असर डालता है। आप जिनके पास जाएँ, ध्यान रखें कि उनका कुछ हर्ज न करें, वरन् छोटी-मोटी सहायता बन पड़े तो करने लगें। यहाँ खुशामद या चाटुकारिता से हमारा प्रयोजन नहीं है। स्वभाव में सेवा और सहायता का विचार होगा, तो वह उनके साथ क्यों प्रकट न होगा जिनसे आप कुछ कृपा भी चाहते हैं। एक बार के कहने पर ही काम नहीं मिल जाता, तो अप्रसन्न न होइए, जब वे लोग आपको परख लेंगे तो इस बात के लिए विवश होंगे कि आपकी मदद करें। जहाँ स्थान या काम वास्तव में नहीं, वहाँ सिर पड़ना भी ठीक नहीं। परंतु जो लोग कर सकते हैं, उनसे सहायता लेने में झिझक भी न करनी चाहिए, क्योंकि मनुष्य जाति एक शृंखला में बँधी हुई है। एक की सहायता के बिना दूसरे का काम नहीं चल सकता। जो मनुष्य इस समय सत्तावान हैं, उन्होंने भी इस स्थान तक पहुँचने में कितनों ही की सहायता और कृपा प्राप्त की होगी। किससे कहें ? क्या कहें ? ऐसा मत सोचिए। जो मनुष्य कर सकते हैं उनसे काम दिलाने के लिए कहिए। बाइबिल का एक मंत्र है—"उसे दिया जाएगा, जो माँगेगा।"

आरंभ में यदि कोई छोटा काम मिलता हो तो भी कर लीजिए। बड़े काम की प्रतीक्षा में बैठे रहना और भूखे मरना यह व्यर्थ है। काम कोई छोटा नहीं है। बड़े आदमी यदि काम करने लगें, तो वह छोटा काम भी बड़ा हो जाता है। महात्मा गांधी चरखा कातते थे, इससे वे छोटे नहीं हुए, वरन् उस काम का महत्त्व बढ़ गया। कृष्ण गौ चराकर,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चरवाहे नहीं हुए, वरन् गौ सेवा का महत्त्व बढ़ गया। इसलिए बेकारी की अपेक्षा यदि कोई छोटा काम, कम पैसे का मिलता हो, तो निस्संकोच कर लीजिए। ऐसा मत सोचिए कि एक बार छोटा काम कर लेने पर हमारा दर्जा छोटा हो जाएगा और फिर बड़ा काम न मिलेगा।

लकड़ी काटकर बेचने वाला और धोबी-भंगी के छोटे काम करके पेट भरने वाला गारफील्ड यदि अपनी योग्यता के कारण अमेरिका का राष्ट्रपति बन सकता है, तो कोई कारण नहीं कि एक काम कर लेने के बाद आपको सदा वह छोटा काम ही मिलेगा। यदि आप हीरा हैं तो विश्वास रखिए अधिक दिन चमार के घर नहीं पड़ा रहना पड़ेगा, घूमते-घामते आप जौहरी के यहाँ पहुँच जाएँगे। छोटे काम को ठुकराइए मत, उँगली पकड़कर कलाई की ओर बढ़िए। काम के क्षेत्रों के संपर्क में आइए, अपनी प्रामाणिकता बढ़ाइए। हम कहते हैं कि आप बेकार नहीं रह सकते और एक दिन संतोषजनक काम प्राप्त कर लेंगे।

कितने ही आदमी भूखे बैठे रहते हैं, पर उन कामों को नहीं करते जो छोटे समझे जाते हैं। एक बाबू को इस बात में झेंप आती है कि वह किसान, मोची, बढ़ई, लोहार या दर्जी का काम करे। वह दफ्तर में बैठकर क्लर्की करना चाहता है, ताकि दूसरे उसे आदर की दृष्टि से देखें। यहाँ हमें भारतवासियों की बुद्धि पर तरस आता है कि सदियों की राजनीतिक गुलामी से उनके विचार और दृष्टिकोण भी कितने गुलाम हो गए हैं। सच तो यह है कि जो अपने पौरुष को तिलांजलि देकर चाकरी की शूद्रवृत्ति को अंगीकार करता है, वह संसार में अपनी हीनता का प्रदर्शन करता है। ऐसे मनुष्यों का वैसी ही गुलामवृत्ति के लोग आदर कर सकते हैं। पौरुष करना यह पुरुष का स्वाभाविक धर्म है। योग्यता से उपार्जन करना यह सिंहवृत्ति है और पराश्रित होकर पेट भरना श्वानवृत्ति है। हमारी दृष्टि से दिनभर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

फटकारें सहने वाले किंतु आसान जीवन बिताने वाले क्लर्क की अपेक्षा वह मोची अधिक आदरणीय है, जो अपने परिश्रम और बुद्धि-कौशल से बढ़िया जूता बना लेता है। काम कोई छोटा नहीं। जिस काम को करने वाले छोटे होते हैं, वही काम छोटा है। उद्योगी पुरुष जब छोटे काम को करते हैं, तो वह काम भी महत्त्वपूर्ण हो बन जाता है। यदि आप बेकार हों तो जरा भी मत झिझकिए कि छोटा काम कैसे करें ? अपनी झेंप को एक कोने की तरफ फेंक दीजिए और जो निर्दोष काम सामने हो, तो उसे करने के लिए सहर्ष तैयार हो जाइए। मि० फुलर कहते हैं—"छोटा काम करने में लज्जित होने की कोई बात नहीं है; लज्जित तो उन्हें होना चाहिए जो बेईमानी से पैसा पैदा करते हैं।" निसमौज चर्च का बिशप फ्लोन्यर जवान उम्र तक दिया जलाने की बत्तियाँ बना-बनाकर पेट पालता रहा। जब उन्नति करके वह महान पद पर पहुँचा, तो एक डॉक्टर ने उसके पुराने पेशे की याद दिलाकर ताना कसा। बिशप ने जवाब दिया कि—"यदि तुम मेरे समान बत्ती बनाने का छोटा पेशा करते तो जन्म भर उसी को करते रहते और उन्नति न कर सकते।"

वैज्ञानिक फैराडे लोहार का लड़का था। बचपन में उसकी विज्ञान की ओर रुचि थी, वह किसी रसायनशाला में काम करना चाहता था। रसायनशाला में नौकरी तलाश करने वह गया और सीखने का अपना इरादा जाहिर किया, तो मालिक ने उसे बोतलें धोने और टूटे-फूटे बरतन समेटने के काम पर यह सोचकर रख लिया कि यदि इसका उन्नतिशील स्वभाव होगा, तो छोटे काम से तरक्की कर लेगा। यदि मूढ़ होगा तो मामूली काम करने में अपनी तौहीन समझकर भाग जाएगा। फैराडे भागा नहीं। उसने बोतलें साफ करने और टूटे बरतन समेटने में ऐसी कुशलता का परिचय दिया कि मालिकों को उसे बरबस ऊँचे काम देने पड़े और एक दिन वह उसी रसायनशाला का सबसे बड़ा वैज्ञानिक बना। एक मूर्तिकार बहुत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बढ़िया पत्थर की तलाश में था, जिससे कि शिवजी की अत्यंत सुंदर मूर्ति बनावे। पर उसकी मरजी का पत्थर, कहीं न मिला, तब वह हताश होकर बैठ रहा। एक रात को शिवजी ने उसे स्वप्न दिया कि बैठे रहने की अपेक्षा तो घटिया पत्थर की मूर्ति बनाना अच्छा है। दूसरे दिन से उसने घटिया पत्थर की मूर्ति बनाना प्रारंभ कर दिया और वह इतनी सुंदर बनी कि जिसकी प्रशंसा चारों ओर फैल गई। आप संपन्न बनना चाहते हैं, तो अवसर की तलाश में हाथ-पर-हाथ रखकर मत बैठिए। आज ही सर्वोत्तम अवसर है। बड़ा काम सामने नहीं है, तो कोई हर्ज नहीं है, छोटा काम आरंभ कीजिए और छोटे से बड़े बनने का प्रयत्न करते रहिए। आपको सफलता मिल जाएगी। एक पारसी कहावत है कि—"आज छोटा काम आरंभ कीजिए, कल बड़े काम आपके पास आकर प्रार्थना करेंगे कि हमें पूर्ण कीजिए।"

बिना पूँजी वालों की मजदूरी ही व्यापार है, क्योंकि वे आरंभ में कुछ कर नहीं सकते, किंतु जिसके पास पूँजी है, उन्हें व्यापार में लगना चाहिए। सेवावृत्ति में जितना वेतन मिलता है, प्रायः उतना ही खर्च बँध जाता है। बहुत ही कम ऐसे उदाहरण मिलेंगे जो नौकरी के द्वारा बिना चोरी किए हुए ही धनवान बन गए हों। मजदूरी में आराम से पेट भरा जा सकता है, पर संपत्ति जमा नहीं हो सकती। कहा गया है कि—"व्यापारे बसते लक्ष्मी" लक्ष्मी का व्यापार में निवास है। जो वस्तु जहाँ है, वह वहीं से प्राप्त हो सकती है। अर्थाभाव के कारण मजबूरी हो अथवा किसी आदर्श या उद्देश्य की पूर्ति के लिए निर्वाह मात्र पर गुजारा कर रहे हों तो बात दूसरी है। इसके अतिरिक्त जो मनुष्य नौकरी करके जीवन बिताते हैं, वे अपनी महानता के साथ खिलवाड़ करते हैं और एक पुराने विद्वान के मतानुसार भाग्य को बेच देते हैं। वे वैध उपायों द्वारा धनवान नहीं हो सकते।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह तो हो ही नहीं सकता कि भलमनसाहत और परिश्रम के स्वभाव वाले को काम न मिले। उसे अवश्य-अवश्य काम मिलेगा। वह कभी भूखा-नंगा नहीं रहेगा। सद्‌गुणी व्यक्ति की हर जगह चाह है। दुनिया उसे छाती से लगाने के लिए हाथ पसारे खड़ी है। कूड़ा-करकट ही इधर-उधर झाड़-बुहारकर फेंका जाता है। आप कूड़ा नहीं सद्‌गुणी बनिए—वनमानुष नहीं, मानुष बनिए। आपको काम मिल जाएगा और यदि आप में महत्त्वाकांक्षाएँ होंगी, उन्नति करने की अदम्य अभिलाषा होगी तो छोटी सीढ़ियों पर चढ़ते हुए ऊँचे पद पर पहुँच जाएँगे।

सच्ची दौलत

धन इसलिए जमा करना चाहिए कि उसका सदुपयोग किया जा सके और उसे सुख एवं संतोष देने वाले कामों में लगाया जा सके, किंतु यदि जमा करने की लालसा बढ़कर तृष्णा का रूप धारण कर ले और आदमी बिना धर्म-अधर्म का ख्याल किए पैसा लेने लगे या आवश्यकताओं की उपेक्षा करके उसे जमा करने की कंजूसी का आदी हो जाए, तो वह धन धूल के बराबर है। हो सकता है कि कोई आदमी धनी बन जाए पर उसमें मनुष्यता के आवश्यक गुणों का विकास न हो और उसका चरित्र अत्याचारी, बेईमान या लंपटों जैसा बना रहे। यदि धन की वृद्धि के साथ-साथ सद्‌वृत्तियाँ भी न बढ़ें, तो समझना चाहिए कि यह धन जमा करना बेकार हुआ और उससे धन को साधन न समझकर साध्य समझ लिया जाता है। धन का गुण उदारता बढ़ाना है, हृदय को विशाल करना है, कंजूसी या बेईमानी के भाव जिसके साथ संबद्ध हों, वह कमाई केवल दुखदायी ही सिद्ध होगी।

जिनका हृदय दुर्भावनाओं से कलुषित हो रहा है, वे यदि कंजूसी से कुछ धन जोड़ भी लें, तो वह उनके लिए कुछ भी सुख नहीं पहुँचाता, वरन् उल्टा कष्टकर ही सिद्ध होता है। ऐसे धनवानों को हम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कंगाल ही पुकारेंगे, क्योंकि पैसे से जो शारीरिक और मानसिक सुविधा मिल सकती है, वह उन्हें प्राप्त नहीं होतीं, उलटी उसकी चौकीदारी की भारी जोखिम सिर पर लादे रहते हैं। जो आदमी अपने आराम में, स्त्री के स्वास्थ्य में, बच्चों की पढ़ाई में दमड़ी खर्चना नहीं चाहते, उन्हें कौन धनवान कह सकता है ? जो दूसरों के कष्टों को पत्थर की भाँति देखता रहता है किंतु शुभ कार्य में कुछ दान करने के नाम पर जिसके प्राण निकलते हैं, ऐसा अभागा मक्खी-चूस कदापि धनी नहीं कहा जा सकता। ऐसे लोगों के पास सीमित मात्रा में ही पैसा जमा हो सकता है, क्योंकि वे उसके द्वारा केवल ब्याज कमाने की हिम्मत कर सकते हैं। जिन व्यापारों में प्रचुर परिमाण में धन कमाया जा सकता है, उनमें घाटे की जोखिम भी रहती है। कंजूस डरता है कि कहीं मेरा पैसा डूब न जाए, इसलिए उसे छाती से छुड़ाकर किसी कारोबार में लगाने की हिम्मत नहीं होती। इन कारणों से कोई भी कंजूस स्वभाव का मनुष्य बहुत बड़ा धनी नहीं हो सकता।

तृष्णा का कहीं अंत नहीं, हवस छाया के समान है, जिसे आज तक कोई भी पकड़ नहीं सका है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य केवल पैसा पैदा करना ही नहीं, वरन् इससे भी कुछ बढ़कर है। पोंपाई नगर के खंडहरों को खोदते हुए एक ऐसे व्यक्ति का अस्थिपंजर मिला, जो हाथ में सोने का एक ढेला बड़ी मजबूती से पकड़े हुए था। मालूम होता है कि उसने मृत्यु के समय सोने की रक्षा की सबसे अधिक चिंता की होगी। एक जहाज डूब रहा था, तो सब लोग नावों में बैठकर भागने लगे, किंतु एक व्यक्ति उस जहाज के खजाने में से धन समेटने में लगा था। साथियों ने कहा—"चलो, भाग चलो ! नहीं तो डूब जाओगे।" पर वह मनुष्य अपनी धुन में ही लगा रहा और जहाज के साथ डूब गया। एक कंजूस आदमी की तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उसे एक ऐसी थैली दी, जिसमें बार-बार निकालने पर भी एक रुपया बना रहता था। साथ ही शंकर जी ने यह भी कह दिया कि जब तक इस थैली को नष्ट न कर दो,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तब तक खर्च करना आरंभ न करना। वह गरीब आदमी एक-एक रुपया निकालने लगा। साथ ही उसकी तृष्णा बढ़ने लगी। बार-बार निकालता ही रहा, यहाँ तक कि निकालते-निकालते ही उसकी मृत्यु हो गई। एक बार लक्ष्मी जी ने प्रसन्न होकर एक भिखारी से कहा कि—"तुझे जितना सोना चाहिए ले लो, पर वह जमीन पर न गिरने पाए, नहीं तो मिट्टी हो जाएगा।" भिखारी अपनी झोली में अंधाधुंध सोना भरता गया, यहाँ तक कि झोली फटकर सोना जमीन पर गिर पड़ा और धूल हो गया। मुहम्मद गोरी जब मरने लगा, तो उसने अपना सारा खजाना आँखों के सामने फैलवाया, वह उसकी ओर आँखें फाड़-फाड़कर देख रहा था और नेत्रों में आँसुओं की धार बह रही थी। तृष्णा के सताए हुए कंजूस मनुष्य भिखमंगों से जरा भी कम नहीं, भले ही उनकी तिजोरियाँ सोने से भरी हुई हों।

सच्ची दौलत का मार्ग आत्मा को दिव्य गुणों से संपन्न करना है। सच समझिए कि हृदय की सद्वृत्तियों को छोड़कर बाहर कहीं भी सुख-शांति नहीं है। भ्रमवश भले ही हम बाह्य परिस्थितियों में सुख खोजते फिरें। यह ठीक है कि कुछ कमीने और निकम्मे आदमी भी अनायास धनवान हो जाते हैं, पर असल में वे धनपति नहीं हैं। यथार्थ में तो वे दरिद्र से भी अधिक दरिद्रता भोग रहे हैं, उनका धन बेकार है, अस्थिर है और बहुत अंशों में तो वह उनके लिए दुखदायी भी है। दुर्गुणी धनवान और कुछ नहीं वरन् एक भिक्षुक है। मरते समय तक जो धनी बना रहे कहते हैं कि वह बड़ा भाग्यवान था, लेकिन हमारा मत है कि वह अभागा है, क्योंकि अगले जन्मों में अपने पापों का फल तो वह स्वयं भोगेगा, किंतु धन को न तो भोग सका और न साथ ले जा सका। जिसके हृदय में सद्प्रवृत्तियों का निवास है, वही सबसे बड़ा धनवान है, चाहे बाहर से वह गरीबी का जीवन ही क्यों न व्यतीत करता हो ! सद्गुणी का सुखी होना निश्चित है। समृद्धि उसके स्वागत के लिए दरवाजा खोले हुए खड़ी है। यदि आप अस्थायी रहने वाली संपदा चाहते हैं, तो धर्मात्मा बनिए। लालच में आकर अधिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पैसे जोड़ने के लिए दुष्कर्म करना, यह तो कंगाली का मार्ग है। खबरदार रहो ? कि कहीं लालच के वशीभूत होकर सोना कमाने तो चलो, पर बदले में मिट्टी ही हाथ लगकर न रह जाए।

एडीसन ने एक स्थान पर लिखा है कि देवता लोग जब मनुष्य जाति पर कोई बड़ी कृपा करते हैं, तो तूफान और दुर्घटनाएँ उत्पन्न करते हैं, जिससे कि लोगों का छिपा हुआ पौरुष प्रकट हो और उन्हें अपने विकास का अवसर प्राप्त हो। कोई पत्थर तब तक सुंदर मूर्ति के रूप में परिणत नहीं हो सकता, जब तक कि उसे छैनी-हथौड़े की हजारों छोटी-बड़ी चोटें न लगें। एडमंडबर्ग कहते हैं कि—"कठिनाई व्यायामशाला के उस उस्ताद का नाम है, जो अपने शिष्यों को पहलवान बनाने के लिए उससे खुद लड़ता है और उन्हें पटक-पटककर ऐसा मजबूत कर देता है कि वे दूसरे पहलवान को गिरा सकें।" जॉन बानथन ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे कि—"हे प्रभु ! मुझे अधिक कष्ट दे, ताकि मैं अधिक सुख भोग सकूँ।"

जो वृक्ष, पत्थरों और कठोर भूभागों में उत्पन्न होते हैं और जीवित रहने के लिए सरदी, गरमी, आँधी आदि से निरंतर युद्ध करते हैं; देखा गया है कि वे वृक्ष अधिक सुदृढ़ और दीर्घजीवी होते हैं। जिन्हें कठिन अवसरों का सामना नहीं करना पड़ता, उनसे जीवन भर कुछ पूर्ण कार्य नहीं हो सकता। एक तत्त्वज्ञानी कहा करता था कि, महापुरुष दुःखों के पालने में झूलते हैं और विपत्तियों का तकिया लगाते हैं। आपत्तियों की अग्नि हमारी हड्डियों को फौलाद जैसी मजबूत बनाती है। एक बार एक युवक ने एक अध्यापक से पूछा, "क्या मैं एक दिन प्रसिद्ध चित्रकार बन सकता हूँ ?' अध्यापक ने कहा—"नहीं।" इस पर उस युवक ने आश्चर्य से पूछा—"क्यों ?" अध्यापक ने उत्तर दिया—"इसलिए कि तुम्हारी पैतृक संपत्ति से एक हजार रुपया मासिक आमदनी घर बैठे हो जाती है।" पैसे की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चकाचौंध में मनुष्य को अपना कर्तव्य-पथ दिखाई नहीं पड़ता और वह रास्ता भूलकर कहीं-से-कहीं चला जाता है। कीमती औजार लोहे को बार-बार गरम करके बनाया जाता है। हथियार तब तेज होते हैं, जब उन्हें पत्थर पर खूब घिसा जाता है। खराद पर चढ़े बिना हीरे में चमक नहीं आती। चुंबक पत्थर को यदि रगड़ा न जाए तो उसके अंदर छिपी हुई अग्नि यों ही सुषुप्त अवस्था में पड़ी रहेगी। परमात्मा ने मनुष्य जाति को बहुत-सी अमूल्य वस्तुएँ दी हैं, इनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण गरीबी, कठिनाई, आपत्ति और असुविधा है, क्योंकि इन्हीं के द्वारा मनुष्य को अपने सर्वोत्तम गुणों का विकास करने योग्य अवसर मिलता है। कदाचित परमेश्वर हर एक व्यक्ति के सब काम आसान कर देता, तो निश्चय ही आलसी होकर हम लोग कबके मिट गए होते।

यदि आपने बेईमानी करके लाखों रुपये की संपत्ति जमा कर ली तो क्या बड़ा काम कर लिया है ? दीन-दुखियों का रक्त चूसकर यदि अपना पेट बढ़ा लिया, तो यह क्या बड़ी सफलता हुई ? आपके अमीर बनने से यदि दूसरे अनेक व्यक्ति दरिद्र बन रहे हों, आपके व्यापार से दूसरों के जीवन पतित हो रहे हों, अनेकों की सुख-शांति नष्ट हो रही हो, तो ऐसी अमीरी पर लानत है। स्मरण रखिए—एक दिन आपसे पूछा जाएगा कि धन को कैसे पाया और कैसे खर्च किया ? स्मरण रखिए, आपको एक दिन न्याय तुला पर तौला जाएगा और उस समय अपनी भूल पर पश्चात्ताप होगा, तब देखोगे कि आप उसके विपरीत निकले जैसा कि होना चाहिए था।

आप आश्चर्य करेंगे कि क्या बिना पैसे के भी कोई धनवान हो सकता है, लेकिन सत्य समझिए इस संसार में ऐसे अनेक मनुष्य हैं, जिनकी जेब में एक पैसा नहीं है या जिनकी जेब ही नहीं है, फिर भी वे धनवान हैं और इतने बड़े धनवान कि उनकी समता दूसरा कोई नहीं कर सकता। जिसका शरीर स्वस्थ है, हृदय उदार है और मन पवित्र है,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यथार्थ में वही धनवान है। स्वस्थ शरीर चाँदी से कीमती है, उदार हृदय सोने से मूल्यवान है और पवित्र मन की कीमत रत्नों से अधिक है। लार्ड कालिंगउड कहते थे—"दूसरों को धन के ऊपर मरने दो, मैं तो बिना पैसे का अमीर हूँ। क्योंकि मैं जो कमाता हूँ नेकी से कमाता हूँ।" सिसरो ने कहा—"मेरे पास थोड़े-से ईमानदारी के साथ कमाए हुए पैसे हैं, परंतु वे मुझे करोड़पतियों से अधिक आनंद देते हैं।"

दधीचि, वसिष्ठ व्यास, वाल्मीकि, तुलसीदास, सूरदास, रामदास कबीर आदि बिना पैसे के अमीर थे, वे जानते थे कि मनुष्य का सब आवश्यक भोजन मुख द्वारा ही अंदर नहीं जाता और न जीवन को आनंदमय बनाने वाली वस्तुएँ पैसे से खरीदी जा सकती हैं। ईश्वर ने जीवनरूपी पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर अमूल्य रहस्यों को अंकित कर रखा है, यदि हम चाहें तो उनको पहचानकर जीवन को प्रकाशमय बना सकते हैं। एक विशाल हृदय और उच्च आत्मा वाला मनुष्य झोंपड़ी में भी रत्नों की जगमगाहट पैदा करेगा। जो सदाचारी है और परोपकार में प्रवृत्त है, वह इस लोक में भी धनी और परलोक में भी। भले ही उसके पास द्रव्य का अभाव हो। यदि आप विनयशील, प्रेमी, निःस्वार्थ और पवित्र हैं, तो विश्वास कीजिए कि आप अनंत धन के स्वामी हैं।

जिसके पास पैसा नहीं, वह गरीब कहा जाएगा, परंतु जिसके पास केवल पैसा है, वह उससे भी अधिक कंगाल है। क्या आप सद्बुद्धि और सद्गुणों को धन नहीं मानते ? अष्टावक्र आठ जगह से टेढ़े थे और गरीब थे, पर जब जनक की सभा में जाकर अपने गुणों का परिचय दिया तो राजा उनका शिष्य हो गया। द्रोणाचार्य जब धृतराष्ट्र के राजदरबार में पहुँचे, तो उनके शरीर पर कपड़े भी न थे, पर उनके गुणों ने उन्हें राजकुमारों के गुरु का सम्मानपूर्ण पद दिलाया। महात्मा डायोस्थनीज के पास जाकर दिग्विजयी सिकंदर ने निवेदन किया—"महात्मन् ! आपके लिए क्या वस्तु उपस्थित करूँ ?" उन्होंने उत्तर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दिया—"मेरी धूप मत रोक और एक तरफ खड़ा हो जा। वह चीज मुझ से मत छीन जो तू मुझे नहीं दे सकता।" इस पर सिकंदर ने कहा—"यदि मैं सिकंदर न होता तो डायोस्थनीज ही होना पसंद करता।"

गुरु गोविंदसिंह, वीर हकीकतराय, छत्रपति शिवाजी, महाराणा प्रताप आदि ने धन के लिए अपना जीवन उत्सर्ग नहीं किया, माननीय गोखले से एक बार एक संपन्न व्यक्ति ने पूछा—"आप इतने बड़े राजनीतिज्ञ होते हुए भी गरीबी का जीवन क्यों व्यतीत करते हैं ? उन्होंने उत्तर दिया—"मेरे लिए यही बहुत है। पैसा जोड़ने के लिए जीवन जैसी महत्त्वपूर्ण वस्तु का अधिक भाग नष्ट करने में मुझे कुछ भी बुद्धिमत्ता प्रतीत नहीं होती।"

फ्रेंकलिन से एक बार धनी मित्र यह पूछने गया कि मैं अपना धन कहाँ रक्खूँ ? उन्होंने उत्तर दिया कि तुम अपनी थैलियों को अपने सिर के अंदर उलट लो, तो कोई भी उसे चुरा न सकेगा।

तत्त्वज्ञों का कहना है कि हे ऐश्वर्य की इच्छा करने वालों ! अपने तुच्छ स्वार्थों को सड़े और फटे-पुराने कुर्ते की तरह उतारकर फेंक दो। प्रेम और पवित्रता का नवीन परिधान धारण कर लो। रोना, झींकना, घबराना और निराश होना छोड़ो, विपुल संपदा आपके अंदर भरी हुई है। धनवान बनना चाहते हो तो उसकी कुंजी बाहर नहीं भीतर तलाश करो। धन और कुछ नहीं सद्‌गुणों का छोटा-सा प्रदर्शन मात्र है। लालच, क्रोध, घृणा, द्वेष, छल और इंद्रिय-लिप्सा को छोड़ दो। प्रेम, पवित्रता, सज्जनता, नम्रता, दयालुता, धैर्य और प्रसन्नता से अपने मन को भर लो। बस, फिर दरिद्रता तुम्हारे द्वार से पलायन कर जाएगी। निर्बलता और दीनता के दर्शन भी न होंगे। भीतर से एक ऐसी अगम्य और सर्वविजयी शक्ति का आविर्भाव होगा, जिसका विशाल वैभव दूर-दूर तक प्रकाशित हो जाएगा।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at

www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org